हिन्दी व्याकरण-8

पाठ – 1 भाषा, व्याकरण एवं वर्ण विचार

आओ कुछ बताएँ

(क) मनुष्य प्राय: अपने विचार तीन प्रकार से प्रकट करता है।

(ख) हिंदी की उपभाषाओं को पाँच वर्गों में बाँटा जा सकता है।

(ग) व्याकरण के तीन अंग होते हैं।

(घ) स्वर के तीन भेद होते हैं– (1) ह्रस्व स्वर, (2) दीर्घ स्वर, (3) प्लुत स्वर।

(ङ) व्यंजन के तीन भेद होते हैं– (1) स्पर्श व्यंजन, (2) अंत:स्थ व्यंजन, (3) उष्म व्यंजन।

आओ कुछ करें

1. (क) (i) सार्थक शब्द
   (ख) (iv) पट्ठा (ग) (iii) पीतांबर
   (घ) (iii) नाई (ङ) (iv) लीची
2. (क) अरबी (ख) यौगिक शब्द
   (ग) देशज (घ) संकर
   (ङ) तत्सम
3. 1. राम – र्+आ+म्+अ
   2. मोहन – म्+ओ+ह्+अ+न्
   3. कैलाश – क्+ऐ+ल्+आ+श्+अ
   4. दिव्या – द्+इ+व्+य्+आ
   5. हरिओम – ह्+अ+र्+इ+ओ+म्+अ
   6. पुस्तक – प्+उ+स्+त्+अ+क्+अ
   8. कमला – क्+अ+म्+अ+ल्+आ
4.

	भाषा	लिपि
1.	अरबी	फारसी
2.	अंग्रेजी	रोमन
3.	उर्दू	फारसी
4.	संस्कृत	देवनागरी
5.	हिंदी	देवनागरी
6.	पंजाबी	गुरुमुखी

5. (क) जिस साधन के द्वारा मनुष्य अपने भावों या विचारों को बोलकर या लिखकर प्रकट करता है, उसे भाषा कहते हैं।
   (ख) किसी भाषा की नियमावली को उसका 'व्याकरण' कहते हैं।
   (ग) वह ध्वनि जो किसी अन्य ध्वनि की सहायता के बिना स्वत: बोली जा सके, स्वर कहलाती है।
   (घ) दो या दो से अधिक व्यंजनों के संयोग से बनने वाले व्यंजन संयुक्त व्यंजन कहलाते हैं।
6. (क) उपभाषा किसी मुख्य भाषा का वह विकसित क्षेत्रीय रूप है जिसमें साहित्य की रचना होती है और जो एक सीमित क्षेत्र में बोली जाती है, लेकिन बोली से अधिक व्यापक होती है।
   उपभाषाओं के नाम– ब्रजभाषा, अवधी, भोजपुरी और खड़ी बोली।
   (ख) उच्चारण की दृष्टि से स्वरों के निम्नलिखित भेद हैं –
   1. ह्रस्व स्वर– जिन स्वरों के उच्चारण में बहुत कम समय अर्थात् एक मात्रा का काल लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। इनकी संख्या चार है।
   2. दीर्घ स्वर– जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व से दुगना समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। इनकी संख्या सात है– आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।
   3. प्लुत स्वर– जिन स्वरों के उच्चारण में दीर्घ स्वर से भी अधिक समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। प्लुत रूप का निर्देश करने के लिए स्वर के आगे '३' का अंक लिखने की परंपरा रही है; जैसे- ओ३म्।
   (ग) हिंदी वर्णमाला में स्वरों और व्यंजनों के अतिरिक्त दो अन्य वर्ण भी हैं- अं तथा अ:। इन दोनों का प्रयोग स्वरों के बाद होता है। ये न तो स्वरों की गणना में आते हैं और न ही व्यंजनों में स्थान पाते हैं। स्वरों के साथ प्रयोग किए जाने के कारण ये व्यंजन भी नहीं बन पाते तथा स्वतंत्र रूप से प्रयोग न किए जाने के कारण इन्हें स्वर भी नहीं कहा जा सकता। इसलिए इन्हें 'अयोगवाह' कहा जाता है।

पाठ – 2 शब्द–विचार

आओ कुछ बताएँ

(क) शब्दों का वर्गीकरण चार प्रकार से किया जाता है।

(ख) उत्पत्ति के आधार पर शब्दों को पाँच भागों में बाँटा जा सकता है।

(ग) तद्भव का अर्थ है– 'तद्' का अर्थ है। उसमें (संस्कृत से) और 'भव' का अर्थ है : 'उत्पन्न हुए', अर्थात् संस्कृत से उत्पन्न हुए शब्द।

(घ) अर्थ के आधार पर शब्द चार प्रकार के होते हैं।

आओ कुछ करें

1. (क) (ii) वर्णों का स्वतंत्र व सार्थक योग
   (ख) (i) सार्थक शब्द
   (ग) (ii) कल
   (घ) (iv) पट्‌ठा
   (ङ) (iv) बहुब्रीहि समास के उदाहरण
   (च) (i) राष्ट्रपति

2. (क) 'तुम जल्दी–जल्दी चला करो' वाक्य में रेखांकित शब्द है- अविकारी
   (ख) 'कत्ल' शब्द अरबी भाषा से लिया गया है।
   (ग) 'सुशासन' शब्द यौगिक शब्द का उदाहरण है।
   (ङ) 'अफसोस' फारसी भाषा का शब्द है, इसका हिंदी पर्याय है- पश्चाताप/दु:ख।
   (य) हिंदी भाषा में बहुप्रचलित शब्द 'थैला' देशज शब्द है।

3. 1. सत्य – रूढ़
   2. सूर्य – योगरूढ़
   3. पीतांबर – योगरूढ़
   4. कमल – रूढ़
   5. नीरज – योगरूढ़
   6. जन्मभूमि – यौगिक
   7. पंकज – योगरूढ़
   8. जलज – योगरूढ़
   9. भोजनालय – यौगिक
   10. रसोईघर – यौगिक
   11. मृगनयनी – यौगिक
   12. नीलकंठ– योगरूढ़

4. 1. जीभ – जिह्वा
   2. अग्नि – आग
   3. नाच – नृत्य
   4. गधा – गदर्भ
   5. सात – सप्त
   6. रात्रि – रात
   7. मयूर – मोर
   8. सिर – शिर
   9. बिंदु – बूँद

5. (क) वर्णों के संयोग से बने सार्थक एवं स्वतंत्र ध्वनि समूह शब्द कहलाते हैं।
   (ख) जब कोई सार्थक शब्द व्याकरण के नियमों लिंग, वचन, कारक, काल आदि) में बँधकर वाक्य में प्रयुक्त होता है, तो उसे 'पद' कहते हैं।
   (ग) हमारे देश में समय–समय पर, विदेशी जातियाँ आती रही हैं। उनकी भाषाओं से बहुत-से शब्द हिंदी में आ गए हैं। ये शब्द विदेशी कहे जाते हैं।
   (घ) कुछ शब्दों के रूप में प्रयोगानुसार कुछ परिवर्तन आ जाता है। इस परिवर्तन को शब्दों में होने वाला विकार भी कहते हैं। यह विकार लिंग, वचन, कारक अथवा पुरुष के प्रभाव से उत्पन्न हो जाता है।

6. (क) जिन शब्दों का कोई न कोई अर्थ निकलता है, उन्हें सार्थक शब्द कहते हैं। जैसे- चाँद, बादल, रोटी आदि।
   जिन शब्दों का कोई अर्थ नहीं होता है, उन्हें निरर्थक शब्द कहते हैं। जैसे–बोरी, फोटी, बानी आदि।
   (ख) स्रोत के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण पाँच भागों में किया जा सकता है–
   1. तत्सम – उच्च, शिखर, पत्र, खग।
   2. तद्भव – ऊँचा, रात, कान, दही।

3. देशज – आटा, घोड़ा, पेड़, चूहा।
4. विदेशी – कोट, चाय, स्टेशन, कुली।
5. संकर – रेलगाड़ी, लाठीचार्ज, घड़ीसाज, टिकटघर।

(ग) जिन शब्दों के खंड किए जाने पर उनका कोई अर्थ न निकले, उन्हें रूढ़ शब्द कहते हैं।

जो शब्द अन्य शब्दों के योग से बने हों, किंतु जिनसे सामान्य अर्थों का बोध न होकर विशेष अर्थों का बोध हो, योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं;

उदाहरण- रूढ़ शब्द – पैर, घोड़ा

योगरूढ़ शब्द – नीरज, चारपाई।

(घ) अर्थ के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण चार प्रकार से होता है–

1. एकार्थी शब्द – जिन शब्दों का प्रयोग केवल एक ही अर्थ में किया जाता है, वे एकार्थी शब्द कहलाते हैं; जैसे- मेज, फर्श।

2. अनेकार्थी शब्द – जिन शब्दों का प्रयोग संदर्भों के अनुसार अलग-अलग अर्थ में किया जा सकता है, वे अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं; जैसे- पत्र–चिट्ठी, पत्रा, समाचार-पत्र।

3. पर्यायवाची शब्द– जिन शब्दों के अर्थों में समानता हो, वे पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं; जैसे- कमल – पंकज, जलज, नीरज, अंबुज।

4. विलोम शब्द – एक-दूसरे के विप. रीत अर्थ प्रकट करने वाले शब्द विलोम अथवा विपरीतार्थक शब्द कहलाते हैं; जैसे- धनी-निर्धन, बुराई-भलाई।

पाठ – 3 शब्द–रचना

➡ आओ कुछ बताएँ

(क) यौगिक शब्दों का निर्माण चार प्रकार से होता है।

(ख) समासयुक्त पद में दो पद होते हैं- (i) पूर्व पद और (2) उत्तर पद।

(ग) समास के छह भेद होते हैं।

➡ आओ कुछ करें

1. (क) (ii) अनुप्रयोग
   (ख) (iv) रसोईघर
   (ग) (ii) भिखारी
   (घ) (ii) पौराणिक
   (ङ) (iii) संक्षिप्त

2. (क) छात्र अध्यापक का अनुदेश मानते हैं।
   (ख) राममोहन हर काम में सहयोग करता है।
   (ग) देश की आबादी बढ़ने के साथ खाद्य वस्तुओं के दाम बढ़े।
   (ङ) किसी का गरीबी में मदद करना सबसे बड़ा धर्म है।
   (य) गौशाला में तत्पुरुष समास है।

3.

	समस्तपद	विग्रह	समास का नाम
1.	आजीवन	जीवनभर	अव्ययी भाव समास
2.	भरपूर	पूरा भरा हुआ	अव्ययी भाव समास
3.	आपबीती	आप (स्वयं) पर बीती	तत्पुरुष समास (अधिकरण)
4.	शरणागत	शरण में आगत	तत्पुरुष समास (कर्म)
5.	यशप्राप्त	यश को प्राप्त	तत्पुरुष समास (कर्म)
6.	डाकगाड़ी	डाक के लिए गाड़ी	तत्पुरुष समास (संप्रदान)
7.	गंगाजल	गंगा का जल	तत्पुरुष समास (संबंध)
8.	देशभक्ति	देश के लिए भक्ति	तत्पुरुष समास (संप्रदान)

4. (क) वे शब्दांश जो किसी शब्द के पहले जुड़कर उनसे अर्थ में विशेषता उत्पन्न कर देते हैं या अर्थ बदल देते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं।

(ख) शब्दों के अंत में जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन लाने वाले शब्दांश प्रत्यय कहलाते हैं।

(ग) जो प्रत्यय क्रिया के मूल धातु-रूप के साथ जुड़कर संज्ञा और विशेषण का निर्माण करते हैं, वे कृत प्रत्यय कहलाते हैं।

5. (क) शब्दों के अंत में जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन लाने वाले शब्दांश प्रत्यय कहलाते हैं।

(ख) भाषा में यौगिक शब्दों का निर्माण निरंतर होता रहता है।

(ग) समास के छह भेद होते हैं–

(1) अव्ययीभाव समास– जिस समस्त पद का पहला पद अव्यय हो तथा वही प्रधान हो और उसके योग से सारा समस्तपद ही अव्यय बन जाए, वह अव्ययीभाव समास कहलाता है; जैसे- यथासमय- ठीक समय पर।

(2) तत्पुरुष समास– जिस समास में दूसरा पद प्रधान होता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। तत्पुरुष समास छह प्रकार का होता है। जैसे- यशप्राप्त - यश को प्राप्त।

(3) कर्मधारय समास – जिस समास में दोनों पदों में विशेषण-विशेष्य अथवा उपमेय-उपमान संबंध होता है। उसे कर्मधारय समास कहते हैं; जैसे- महादेव - महान है जो देव।

(4) द्विगु समास – जिस समास का पहला पद संख्यावाचक विशेषण से और किसी समूह का बोध कराता हो, उसे द्विगु समास कहते हैं; जैसे- दोराहा- दो राहों का समाहार।

(5) द्वंद्व समास – जिस समस्तपद में दोनों पद प्रधान हों और विग्रह करने पर 'एवं', और 'तथा' आदि योजक शब्द लगते हों, वह द्वंद्व समास कहलाता है; जैसे- हार-जीत – हार तथा जीत।

(6) बहुव्रीहि समास – जिस समास का कोई भी पद प्रधान नहीं होता, बल्कि कोई अन्य पद ही प्रधान होता है, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं; जैसे- दशानन- दश हैं आनन जिसके अर्थात् रावण।

(घ) तत्पुरुष समास के उपभेद निम्नलिखित हैं–

(i) अलुक् तत्पुरुष – जिस समस्तपद की विभक्ति का लोप नहीं होता, वह 'अलुक् तत्पुरुष' कहलाता है; जैसे- खेचर – खे (आकाश में) विचरने वाला।

(ii) नञ् तत्पुरुष – जिस समस्तपद में पहला पद निषेधात्मक हो, उसे नञ् तत्पुरुष कहते हैं। जैसे- अधर्म- न धर्म।

(iii) मध्यमपदलोपी तत्पुरुष – जिस समस्तपद के दोनों पदों के बीच में कोई पद लुप्त हो, उस मध्यमपदलोपी तत्पुरुष कहते हैं। जैसे- वनमानुष – वन में रहने वाला मानुष।

पाठ – 4 संधि

आओ कुछ बताएँ

(क) संधि शब्द का अर्थ है– 'मेल'।

(ख) संधि तीन प्रकार की होती हैं–

(i) स्वर संधि, (ii) व्यंजन संधि, (iii) विसर्ग संधि।

(ग) स्वर संधि के पाँच उपभेद होते हैं।

आओ कुछ करें

1. (क) (i) संधि

(ख) (iii) तीन

(ग) (ii) दीर्घ संधि

(घ) (iii) स्वर संधि

(ङ) (iii) गुरूपदेश

2. (क) अन्वेषण का संधि-विच्छेद अनु+ऐषण होता है।
(ख) अंतर्राष्ट्रीय शब्द विसर्ग संधि का उदाहरण है।
(ग) अधीश का संधि+विच्छेद है– अधि+ईश।
(ङ) परोपकार शब्द अ+उ स्वरों के मेल से बना है।

3. (क) मही + इंद्र = महेन्द्र
सु + उक्ति = सूक्ति
गिरि+ईश = गिरीश
(ख) नर + इंद्र = नरेन्द्र
पर + उपकार = परोपकार
राजा + ऋषि = राजर्षि
(ग) सदा + एव = सदैव
वन + औषधि = वनौषधि
यदि + अपि = यद्‌यपि
(घ) प्रति + एक = प्रत्येक
अति + अधिक = अत्यधिक
सु + अस्ति = स्वस्ति
(ङ) सु + आगत = स्वागत
भो + अन = भवन
पॉ + अक = पावक

4. 1. शरच्चंद्र = शरत + चंद्र
2. दिगम्बर = दिक् + अंबर
3. अंतर्गत = अंतः + गत
4. महोत्सव = महा + उत्सव
5. रजनीश = रजनी + ईश
6. दुर्जन = दुः + जन
7. सतीच्छा = सती + इच्छा
8. राजैश्वर्य = राजा + ऐश्वर्य
9. मात्राज्ञा = मातृ + आज्ञा
10. अन्वेषण = अनु + एषण

5. (क) व्यंजन संधि और विसर्ग संधि– व्यंजन संधि में व्यंजन का स्वर या व्यंजन से मेल होता है, जबकि विसर्ग संधि में विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन आता है।
(ख) दीर्घ संधि में समान स्वर मिलकर दीर्घ (आ, ई, ऊ) हो जाते हैं, जबकि गुण संधि में 'अ/आ के बाद 'इ/ई, उ/ऊ या ऋ आने पर वे क्रमशः 'ए', 'ओ' या 'अर्' में बदल जाते हैं।

6. (क) निकटवर्ती वर्णों के मेल से होने वाले परिवर्तन को संधि कहते हैं।
(ख) संधि के नियमों के अनुसार मिले हुए वर्णों को यदि अलग-अलग कर दिया जाए, तो यह प्रक्रिया संधि-विच्छेद कहलाती है; जैसे- पुस्तकालय - पुस्तक+आलय।
(ग) दो स्वरों के मेल से उत्पन्न विकार अथवा रूप परिवर्तन को स्वर संधि कहते हैं। जैसे- राजा+ईश = राजेश।

7. (क) संधि के प्रकार– संधि के तीन प्रकार हैं–
(1) स्वर संधि– दो स्वरों के मेल से उत्पन्न विकार अथवा रूप-परिवर्तन को स्वर संधि कहते हैं; जैसे- राजा+ईश = राजेश।
स्वर संधि के पाँच उपभेद हैं– (i) दीर्घ संधि, (ii) गुण+संधि, (iii) वृद्धि संधि, (iv) यण संधि, (v) अयादि संधि।
(2) व्यंजन संधि– जब परस्पर मिलने वाले दो शब्दों में से पहले शब्द के अंत में कोई व्यंजन और दूसरे शब्द के प्रारंभ में कोई स्वर या व्यंजन हो, तो उनके बीच होने वाले मेल को व्यंजन संधि कहते हैं।
(3) विसर्ग संधि – परस्पर मिलने वाले दो शब्दों में से पहले शब्द के अंत में विसर्ग (:) और दूसरे शब्द के प्रारंभ में स्वर या व्यंजन से होने वाले मेल को विसर्ग संधि कहते हैं।
(ख) यदि ह्रस्व या दीर्घ 'इ, उ' या 'ऋ' के बाद कोई भिन्न स्वर हो, तो इनके योग से इनके स्थान पर क्रमशः 'य्', 'व्' और 'अर्' हो जाता है। इसे यण् संधि कहते हैं; जैसे- यदि+अपि = यद्‌यपि।
(ग) परस्पर मिलने वाले दो शब्दों में से पहले शब्द के अंत में विसर्ग (:) और दूसरे शब्द के प्रारंभ में स्वर या व्यंजन से होने वाले मेल को विसर्ग संधि कहते हैं; जैसे- निः + चय = निश्चय।

पाठ – 5 शब्द भंडार

आओ कुछ बताएँ

(क) समान अर्थ देने वाले शब्द 'समानार्थी' या 'पर्यायवाची' शब्द कहलाते हैं।

(ख) जो शब्द परस्पर विपरीत अर्थ प्रकट करें, उन्हें विलोम शब्द या विपरीतार्थक शब्द कहते हैं।

(ग) कुछ शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, ऐसे शब्दों को अनेकार्थी शब्द कहते हैं।

आओ कुछ करें

1. (क) (iii) पक्षी (ख) (iv) शुष्क
(ग) (iii) शोर (घ) (i) सूँड़
(ङ) (iii) चतुर को भी

2. (क) राजा ने कोष दोनों हाथों से लुटा दिया।
(ख) उसकी बात सुनकर वह हँस पड़ा।
(ग) रामचरितमानस की भाषा अवधी है।
(घ) जो सेवा आपने अपने मित्र की, की है वह अमूल्य है।
(ङ) मेरी चाय पीने की इच्छा है।

3. (क) (i) इष्ट–अनिष्ट, सरस-विरस, वन–मरु
(ii) आस्तिक - नास्तिक, आकर्षण - अनाकर्षण, थोड़ा - बहुत
(iii) एड़ी-चोटी, आशा-निराशा, गुप्त-प्रकट
(iv) जटिल-सरल, ताप-शीत, उर्वरा-ऊसर
(v) झूठ-सच, चल-विचल।

(ख)(i) जल (ii) रंज
(iii) नगीना (iv) मोक्ष
(v) मृत्यु

(ग) (i) जो कटु बोलता हो – कटुभाषी
(ii) जो कला जानता हो – कलाकार
(iii) गगन को चूमने वाला – गगनचुंबी
(iv) जहाँ जाया न जा सके – अगम्य
(v) आलोचना करने वाला – आलोचक
(vi) जो संगीत जानता हो – संगीतज्ञ

3. (क) कमल – नीरज, जलज, पंकज
गंगा – देवनदी, सुरसरी, भागीरथी

(ख) (i) तरुण – वयस्क
(ii) जीवन – मृत्यु
(iii) मनुज – दानव
(iv) कनिष्ठ – वरिष्ठ
(v) चल – अचल
(vi) निर्मल – समल

(ग)(i) विधि – तरीका, कानून, भाग्य
(ii) कर – हाथ, सूँड़, टैक्स

(घ) (i) गज – मंदिर प्रांगण में गज भगवान को पुष्प अर्पित कर रहा है।
गज़ – मुझे दो गज़ कपड़ा चाहिए।

(ii) गिरि – हिमालय गिरि की गुफाओं में संन्यासी तप करते हैं।
गिरी – राजेश को बादाम की गिरी खाना बहुत पसंद है।

(ङ) (i) अभूतपूर्व – जो पहले कभी नहीं हुआ।
(ii) वाचाल – जो बहुत और व्यर्थ बोलता है।

4. (क) **1. वन –** प्रकृति द्वारा निर्मित क्रमहीन वृक्ष, लतादि से आच्छादित भूमि (जंगल)।

वाक्य– वन औषधीय वृक्षों से परिपूर्ण होते हैं।

उपवन – मनुष्य द्वारा निर्मित वृक्ष, बगीचा।

वाक्य– यह उपवन बहुत सुंदर है।

2. शत्रु – दुश्मन (जान व माल दोनों को हानि पहुँचाने वाला)

वाक्य – भारतीय सैनिकों ने सीमा पर शत्रु के मंसूबों को नाकाम कर दिया।

विरोधी – विरोध करने वाला

वाक्य – सरकार को सदैव विरोधी पक्ष का सामना करना पड़ता है।

पाठ – 6 संज्ञा

आओ कुछ बताएँ

(क) संज्ञा के तीन भेद होते हैं।

(ख) भाववाचक संज्ञाओं की रचना पाँच प्रकार के शब्दों से होती है।

(ग) जिन शब्दों से संज्ञा के समूह का बोध होता हो, उन्हें समूहवाचक संज्ञा कहते हैं।

आओ कुछ करें

1. (क) (i) गंगा
   (ख) (ii) लघु (लघुता)
   (ग) (iv) सेना (घ) (i) सोना
   (ङ) (ii) शिक्षक
2. (क) प्राय: गुण-दोष, अवस्था, व्यापार, अमूर्तभाव तथा क्रिया भाववाचक संज्ञा के अन्तर्गत आते हैं।
   (ख) ईमानदारी एक अच्छा गुण है।
   (ग) जिस संज्ञा शब्द से किसी समूह का बोध होता है, उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं।
   (घ) जिस संज्ञा शब्द से किसी धातु, पदार्थ अथवा द्रव्य का ज्ञान हो, द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।
   (ङ) 'आगरा में ताजमहल है।' रेखांकित शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा है।
3. (क) चालाक – चालाकी
   (ख) शिष्ट – शिष्टता
   (ग) परिवार – पारिवारिक
   (घ) जलना – जलन
   (ङ) फैलना – फैलाव
4. (क) सेना – समूहवाचक संज्ञा
   (ख) घोड़ा – जातिवाचक संज्ञा
   (ग) दूध – द्रव्यवाचक संज्ञा
   (घ) पीतल – द्रव्यवाचक संज्ञा
   (ङ) अच्छाई – भाववाचक संज्ञा
   (च) मेला – समूहवाचक संज्ञा
   (छ) हरिद्वार – व्यक्तिवाचक संज्ञा
   (ज) हिंसा – भाववाचक संज्ञा
5.

	व्यक्तिवाचक	**भाववाचक**	**जातिवाचक**
(क)	मुंबई	सर्दी	चाचाजी, कुर्ता
(ख)	भारतवर्ष, गांधी, नेहरू	सपना	–
(ग)	–	–	आँखों, आँसू
(घ)	–	उदारता	लोगों, महात्मा
(ङ)	राजीव	सच्चाई	–

6. (क) किसी प्राणी, वस्तु, गुण, भाव या स्थिति के नाम को संज्ञा कहते हैं।
   (ख) संज्ञा के भेदों के नाम निम्नलिखित हैं–
   1. व्यक्तिवाचक संज्ञा
   2. जातिवाचक संज्ञा
   3. भाववाचक संज्ञा
   4. द्रव्यवाचक संज्ञा
   5. समूहवाचक संज्ञा

   (ग) जो संज्ञा शब्द किसी विशेष नाम के व्यक्ति, प्राणी, वस्तु या स्थान का बोध कराएँ, उन्हें व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे- राजीव, चेतक, गांडीव।
7. (क) व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ एकवचन में प्रयुक्त होती हैं; किंतु जब विशेष परिस्थितियों, आवश्यकताओं अथवा रूढ़ियों के कारण इन्हें एक व्यक्ति या भाव के लिए प्रयुक्त न करके व्यक्ति सामान्य या भाव सामान्य के लिए प्रयुक्त किया जाता है, तो यह जातिवाचक संज्ञा बन जाती है, उस समय में बहुवचन भी हो सकती है।
   (ख) जिन संज्ञा शब्दों से विभिन्न पदार्थों का बोध होता है, उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं। जबकि, जिन शब्दों से संज्ञा के समूह का बोध हो, उन्हें समूहवाचक संज्ञा कहते हैं।
   (ग) भाववाचक संज्ञाएँ पाँच प्रकार से बनाई जाती हैं–
   1. जातिवाचक संज्ञाओं से–मित्र-मित्रता, बच्चा - बचपन

2. सर्वनामों से – अपना-अपनत्व, पराया - परायापन
3. विशेषणों से – मीठा - मिठास, शिष्ट - शिष्टता
4. क्रियाओं से – पढ़ना - पढ़ाई, फैलाना - फैलाव
5. अव्यय शब्दों से – निकट-निकटता, समीप - समीपता।

पाठ – 7 लिंग

आओ कुछ बताएँ

(क) लिंग दो प्रकार के होते हैं–
1. पुल्लिंग, 2. स्त्रीलिंग

(ख) लिंग की पहचान का निर्णय दो प्रकार से किया जाता है।

(ग) स्त्रीलिंग शब्द - पत्नी

(घ) पुल्लिंग शब्द – पति

आओ कुछ करें

1. (क) (ii) विद्वान
(ख) (ii) पुल्लिंग
(ग) (i) स्त्रीलिंग
2. (क) नित्य पुल्लिंग शब्द है– उल्लू।
(ख) नित्य स्त्रीलिंग शब्द है- मछली।
(ग) अनाजों के नाम प्रायः पुल्लिंग होते हैं।
(घ) वृक्षों के नाम प्रायः पुल्लिंग होते हैं।
3. (क) शब्द के जिस रूप से यह पता चले कि यह पुरुष (नर) जाति का है अथवा स्त्री (मादा) जाति का, उसे व्याकरण में लिंग कहते हैं।
(ख) जो शब्द स्त्री-जाति का बोध कराते हैं; स्त्रीलिंग कहलाते हैं।
(ग) जो शब्द पुरुष-जाति का बोध कराते हैं; पुल्लिंग कहलाते हैं।
(घ) तत्सम अकारांत शब्दों के अंत में 'आ' जोड़कर - छात्र-छात्रा।
4. (क) प्राणीवाचक संज्ञाओं में पुरुष-जाति का बोध करने वाले शब्द पुल्लिंग और स्त्री-जाति का बोध कराने वाले शब्द स्त्रीलिंग होते हैं। किंतु कुछ शब्द नित्य पुल्लिंग में और कुछ शब्द नित्य स्त्रीलिंग में ही प्रयुक्त होते हैं–
(ख) 1. नयन - आँख
2. देह - काया
3. पत्र - चिट्ठी
4. वायु - पवन
5. गृह - शाला

(ग)

अंत होने वाले वर्ण	शब्द (उदाहरण)	लिंग
ख	ईख, कोख, राख, भूख	स्त्रीलिंग
त्र	पत्र, चित्र, पात्र, नक्षत्र	पुल्लिंग
त	रात, छत, बात, लात	स्त्रीलिंग
री	कटोरा, छतरी, डोरी, टोकरा	स्त्रीलिंग
आ	कपड़ा, लड़का, घोड़ा, पहिया	पुल्लिंग

(घ)

प्रत्यय	शब्द	लिंग
आवट	सजावट, लिखावट, थकावट	स्त्रीलिंग
आव	बहाव, घुमाव, चुनाव	पुल्लिंग
खाना	दवाखाना, जेलखाना, कारखाना	पुल्लिंग
आपा	बुढ़ापा, मोटापा, पुजापा	पुल्लिंग
अक	लेखक, पाठक, गायक	पुल्लिंग

पाठ – 8 वचन

आओ कुछ बताएँ

(क) वचन दो प्रकार के होते हैं–
1. एकवचन, 2. बहुवचन।

(ख) जनता, भीड़ आदि के लिए एकवचन का प्रयोग किया जाता है।

(ग) किसी के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए एकवचन को बहुवचन में बदला जाता है।

आओ कुछ करें

1. (क) (iii) कविताएँ
(ख) (i) दादा
(ग) (iv) छात्राएँ

2. (क) डॉक्टर सदैव <u>मरीज</u> की सेवा करता है।
(ख) हम सबने आचार्यजी को अपने <u>भावों</u> से परिचित कराया।
(ग) सभी <u>छात्राएँ</u> अपने घरों से पानी लाती हैं।

3. (क) शब्द का वह रूप जिससे यह ज्ञात हो कि वह एक संज्ञा या सर्वनाम के लिए है अथवा एक से अधिक के लिए, प्रयुक्त हुआ वचन कहलाता है।
(ख) शब्द के जिस रूप से एक प्राणी या वस्तु का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं।
(ग) शब्द के जिस रूप से एक से अधिक प्राणियों या वस्तुओं का बोध हो, उसे बहुवचन कहते हैं।

4. (क) एकवचन से बहुवचन– परिवर्तन संबंधी नियम निम्नलिखित हैं–
1. अकारांत पुल्लिंग शब्दों में अंतिम 'अ' को 'ए' कर दिया जाता है–
जैसे- बेटा-बेटे, ताला-ताले।
2. अकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'एँ' जोड़ दिया जाता है। जैसे- छात्रा-छात्राएँ, लता- लताएँ।

4. इकारांत और ईकारांत शब्दों के अंत में 'याँ' जोड़कर 'ई' का 'इ' कर दिया जाता है–
जैसे- नारी-नारियाँ, रानी-रानियाँ

5. स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'या' को 'याँ' करने से–
जैसे- चुहिया - चुहियाँ, चिड़िया-चिड़ियाँ

7. कुछ एकवचन शब्दों में 'गण, जन, वृंद, वर्ग, लोग, समाज आदि शब्द जोड़कर उन्हें बहुवचन बनाते हैं। जैसे- मित्र - मित्रगण, पाठक - पाठकगण।

8. (क) कुछ शब्दों जैसे- भेड़-बकरी, गाय-भैंस, घोड़ा-गाड़ी जैसे समस्तपदों का बहुवचन बनाने के लिए केवल अंतिम शब्द में परिवर्तन होता है– कुछ गाय-भैंसें रोगों के कारण मर गईं।
(ख) आदरसूचक बहुवचन हिंदी व्याकरण में वह प्रयोग है, जहाँ किसी एक ही व्यक्ति को सम्मान या आदर देने के लिए एकवचन के स्थान पर बहुवचन की क्रिया या सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है। जैसे- पिताजी आ रहे हैं।

पाठ – 9 कारक

आओ कुछ बताएँ

(क) कारक के आठ भेद होते हैं।

(ख) कारकीय-चिह्नों को विभक्तियाँ का परसर्ग कहते हैं।

(ग) कर्ता कारक का प्रयोग निम्न प्रकार से होता है- 1. परसर्ग सहित, 2. परसर्ग रहित।

(घ) कर्मकारक का विभक्ति चिह्न–को।

आओ कुछ करें

1. (क) (ii) करण कारक
(ख) (i) कर्म कारक
(ग) (iii) कर्ता कारक
(घ) (iii) अपादान कारक

2. (क) वाक्य में क्रिया को संपन्न करने वाला पद कर्ता कारक कहलाता है।
(ख) संज्ञा या सर्वनाम का दूसरी संज्ञा या सर्वनाम से संबंध बताने वाले रूप को संबंध कारक कहते हैं।
(ग) संज्ञा के जिस रूप से क्रिया के स्थान या समय आदि का बोध हो, उसे अधिकरण कारक कहते हैं।
(घ) संज्ञा के जिस रूप से किसी को पुकारा जाए, उसे संबोधन कारक कहते हैं।
3. (क) राम ने मोहन को आम दिया। संप्रदान कारक
(ख) पेड़ से आम गिरा। अपादान कारक
(ग) अपूर्वा ने पेंसिल से चित्र बनाया। करण कारक
(घ) हमारा घर दूर है। संबंध कारक
4. (क) परीक्षा मार्च में होगी।
(ख) मोहन ने चाकू से सेब काटा।
(ग) रमा को स्कूल जाना है।
5. पर – अधिकरण कारक
की – संबंध कारक
के लिए – संप्रदान कारक
में – अधिकरण कारक
की – संबंध कारक
से – करणकारक/अपादान कारक
जैसे- चुहिया - चुहियाँ, चिड़िया-चिड़ियाँ
6. (क) संज्ञा और सर्वनाम के जिस रूप और कार्य से उसका संबंध वाक्य में क्रिया या अन्य संज्ञा या सर्वनाम पदों से जाना जाए, उसे कारक कहते हैं।
(ख) विभक्ति चिह्न निम्नलिखित हैं–
1. कर्ता कारक – ने
2. कर्म कारक – को
3. करण कारक – से, को द्वारा
4. सम्प्रदान कारक – के लिए, को
5. अपादान कारक – से (अलग होना)
6. संबंध कारक – का, की, के, रा, री, रे
7. अधिकरण कारक – में, पर, पे, ऊपर
8. संबोधन कारक – हे, अरे, ओ, भो।
(ग) संज्ञा के जिस रूप से किसी को पुकारा जाए, वह संबोधन कारक कहलाता है।
(घ) कर्म कारक तथा संप्रदान कारक में अंतर– दोनों कारकों में 'की' परसर्ग का प्रयोग होता है। संप्रदान कारक में देने का भाव मुख्य होता है, जबकि कर्म कारक में क्रिया के प्रभाव का भाव होता है।
7. (क) कारक के निम्नलिखित भेद हैं–
(i) कर्ता कारक – ने
(ii) कर्म कारक – को
(iii) करण कारक – से, के द्वारा
(iv) सम्प्रदान कारक – के लिए, को
(v) अपादान कारक – से (अलग होना)
(vi) संबंध कारक – का, की, के, रा, री, रे
(vii) अधिकरण कारक – में, पर, पे, ऊपर
(viii) संबोधन कारक – हे, अरे, ओ, भो।
(ख) करण कारक तथा अपादान कारक दोनों का विभक्ति-चिह्न 'से' है, परंतु करण कारक में 'से' किसी साधन या सहायक का सूचक होता है, जबकि अपादान कारक में 'से' अलग होने का सूचक होता है।
करण कारक– मैंने पेन से पत्र लिखा।
अपादान कारक– मेरे हाथ से पेन छूट गया।

(ग) **कारक**	**एकवचन**	**बहुवचन**
कर्तावस्तु, वस्तु ने	वस्तुएँ, वस्तुओं ने	
कर्म	वस्तु को	वस्तुओं को
करण	वस्तु से, के द्वारा	वस्तुओं से, के द्वारा
संप्रदान	वस्तु को, के लिए	वस्तुओं को, के लिए

अपादान	वस्तु से	वस्तुओं से
संबंध	वस्तु का, के, की	वस्तुओं का, के, की
अधिकरण	वस्तु में, पर	वस्तुओं में, पर
संबोधन	हे वस्तु!	हे वस्तुओ!

पाठ – 10 सर्वनाम

आओ कुछ बताएँ

(क) सर्वनाम के छह भेद होते हैं।

(ख) वाक्य में संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं।

(ग) अभिमान या क्रोध की स्थिति में 'मैं' के स्थान पर 'हम' शब्द प्रयुक्त किया जाता है।

आओ कुछ करें

1. (क) (iv) संज्ञा शब्दों के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं।
(ख) (i) छह
(ग) (ii) किसे
(घ) (i) संबंधवाचक
(ङ) (iii) कोई

2. (क) हरिओम ने उसका पैसा लौटा दिया था।
(ख) दीपक दीपावली पर अपने साथ बच्चों को भी लाएगा।
(ग) मैं कल तक तुम्हारी पुस्तक वापस कर दूँगा।
(घ) मैंने वह पुस्तक पढ़कर उन्हें लौटा दी थी।

3.

क	ख
अनिश्चयात्मक	थे
उत्तमपुरुषवाचक	मैं
संबंधवाचक	जिसको
प्रश्नवाचक	कौन
निजवाचक	स्वयं

4. (क) बोलने वाले, लिखने वाले, सुनने वाले, पढ़ने वाले या किसी अन्य व्यक्ति के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग किया जाता है, वे पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
(ख) जो सर्वनाम तीनों पुरुषों में निजत्व (अपने आप) का बोध कराते हैं, उन्हें निजवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे- आप, स्वयं, खुद, अपने आप आदि।
(ग) 1. कुटुंब, देश या जाति के बारे में बोलते हुए 'हम' का प्रयोग देखने को मिलता है। जैसे- हमारे देश की संस्कृति में उदारता की प्रमुखता है।
2. अभिमान या क्रोध में भी 'मैं' के स्थान पर 'हम' का प्रयोग कर दिया जाता है। जैसे- हम उसकी ईंट से ईंट बजा देंगे।

5. **(क) 1. पुरुषवाचक सर्वनाम–**
(i) मैं कल गाँव जाऊँगा।
(ii) तुम्हें अब घर जाना चाहिए।
2. निश्चयवाचक सर्वनाम –
(i) ये मीठे फल हैं।
(ii) यह पुस्तक बहुत उपयोगी है।
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम–
(i) राम शायद कल आएगा।
(ii) खाने में कुछ गिर गया है।
4. संबंधवाचक सर्वनाम–
(i) जैसी करनी, वैसी भरनी।
(ii) जैसा बोओगे, वैसा काटोगे।
5. प्रश्नवाचक सर्वनाम–
(i) राम कहाँ जा रहे हो?
(ii) रमेश विद्यालय कब जाता है?
6. निजवाचक सर्वनाम–
(i) तुम्हें अपना काम स्वयं करना चाहिए।
(ii) वह अपने आप सारा काम संभालता है।

(ख) संज्ञा किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को कहते हैं, जैसे- राम, दिल्ली, मेज। जबकि सर्वनाम वे शब्द हैं जो संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं, जैसे- वह, तुम, मैं।

(ग) निश्चयवाचक सर्वनाम निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध कराते हैं, जबकि अनिश्चयवाचक सर्वनाम अनिश्चितता को दर्शाते हैं।

पाठ – 11 क्रिया

आओ कुछ बताएँ

(क) वाक्य में किसी काम के करने या होने की सूचना देने वाले शब्दों को क्रिया कहते हैं।

(ख) कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं– (i) अकर्मक क्रिया
(ii) सकर्मक क्रिया

(ग) वे क्रियाएँ जिनको कर्म की आवश्यकता नहीं होती, उन्हें अकर्मक क्रिया कहते हैं, जबकि वे क्रियाएँ जिनको कर्म की आवश्यकता होती है, उन्हें सकर्मक क्रिया कहते हैं।

(घ) द्विकर्मक क्रिया वह सकर्मक क्रिया है, जिसके दो कर्म होते हैं। जैसे- शिक्षक ने विद्यार्थी को पुस्तक दी।

(ङ) जब वाक्य का 'कर्ता' स्वयं कार्य न करके दूसरे को कार्य करने को प्रेरित करता है, प्रेरित कर्ता मुख्य कर्ता होता है, इन वाक्यों में प्रयुक्त होने वाली क्रिया प्रेरणार्थक क्रिया होती है।

आओ कुछ करें

1. (क) (iv) बैलगाड़ी धीरे-धीरे चलती है।
(ख) (iv) प्रिया पत्र लिखती है।
(ग) (i) वह खाना खाकर आ रहा है।
(घ) (iii) रँगवाना
(ङ) (iv) क्रिया

2. (क) पहाड़ से नदी अपना रास्ता स्वयं <u>बनाती</u> है।
(ख) मुझे मेरी माँ ने पढ़ना <u>सिखाया</u>।
(ग) मुझे अभी गणित भी <u>पढ़ना</u> है।
(घ) माँ ने नहाकर पूजा भी <u>कर</u> ली।
(ङ) कार डिवाइडर से <u>टकरा</u> गई।

3.

	वाक्य	क्रिया-पद	भेद
(क)	रमा जाग रही है।	जाग रही है।	अकर्मक
(ख)	सुनील चला जाएगा।	चला जाएगा।	अकर्मक
(ग)	नौकर सफाई कर रहा है।	सफाई कर रहा है	सकर्मक
(घ)	माला के पिताजी ने खिलौने खरीदे।	खरीदे।	सकर्मक
(ङ)	अध्यापक ने मुझे बुलाया।	बुलाया	सकर्मक

4. (क) थपथप – थपथपाना
(ख) भूल – भुलाना
(ग) भौं-भौं – भौंकना
(घ) झूठ – झूठलाना
(ङ) मोटा – मुटियाना
(च) लज्जा – लजाना
(छ) थर-थर – थरथराना
(ज) बड़-बड़ – बड़बड़ाना।

5.

	वाक्य	क्रिया-पद	भेद
(क)	उसने पत्र भेज दिया है	भेज	दिया है
(ख)	बच्चा हँस पड़ा।	हँस	पड़ा
(ग)	यह तुमने क्या कर दिया?	कर	दिया
(घ)	मेरे मित्र चले गए हैं।	चले	गए हैं
(ङ)	उसने खाना खा लिया था	खा	लिया था
(च)	वह दिनभर सोती रही	सोती	रही

6.

	क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
(क)	चलना	चलाना	चलवाना
(ख)	बनना	बनाना	बनवाना
(ग)	डूबना	डुबाना	डुबवाना
(घ)	लगना	लगाना	लगवाना
(ङ)	चढ़ना	चढ़ाना	चढ़वाना

7.

	वाक्य	क्रिया
(क)	गाड़ी देर से पहुँची।	अकर्मक क्रिया
(ख)	मुझे यह काम करना पड़ा।	संयुक्त क्रिया
(ग)	माँ ने धोबी से कपड़े धुलवाए।	प्रेरणार्थक क्रिया
(घ)	छात्र कक्षा में पढ़ रहे हैं।	सकर्मक क्रिया
(ङ)	अब तो उसे खेलने दो।	संयुक्त क्रिया

पाठ – 12 विशेषण

आओ कुछ बताएँ

(क) (i) वह सुंदर बालक कौन हैं?

(ii) राम एक बेईमान लड़का है।

(iii) लाल गुलाब मुझे बहुत पसंद है।

(iv) आप तिकोनी मेज ले लीजिए।

(ख) (i) मुझे दो किलो चावल चाहिए।

(ii) ग्वाला आज दो लीटर दूध देकर गया।

(iii) माला ने चार मीटर कपड़ा खरीदा।

(ग) (i) बगीचे में आज तीन नए पौधे लगाए गए।

(ii) राम ने बाजार से दो पुस्तकें खरीदीं।

(iii) पिंजरे में दो तोते बंद हैं।

आओ कुछ करें

1. (क) (i) उसके पिताजी बड़े अधिकारी थे।
(ख) (iii) मेरे पास पाँच बीघा जमीन है।
(ग) (i) दयावती
(घ) (iii) तनिक सा दूध
(ङ) (ii) वह ससुराल गई।

2. (क) भगवान बड़े दयालु हैं, सब पर कृपा करते हैं।
(ख) मंदिर, मस्जिद और चर्च धार्मिक स्थान हैं।
(ग) जयपुर में अनेक ऐतिहासिक स्थानों को देखा जा सकता है।
(घ) मारुति एक जापानी कार कंपनी है।
(ङ) चीनी व्यक्ति की लंबाई कम होती है।

3.

	वाक्य	विशेषण	भेद
(क)	बीस ग्राम काली मिर्च डालना।	बीस ग्राम, काली	निश्चित संख्यावाचक, गुणवाचक
(ख)	माधुरी दस किलो चावल लाई।	दस किलो	निश्चित संख्यावाचक
(ग)	अगले साल तुम नवीं कक्षा में जाओगे।	अगले, नवीं	कालवाचक निश्चित संख्यावाचक
(घ)	सड़क पर काफी कूड़ा था।	काफी	अनिश्चित परिमाणवाचक
(ङ)	जीवन में सब कुछ ठीक नहीं चलता।	सब कुछ	अनिश्चित संख्यावाचक

4.
(क) गुलाब – गुलाबी
(ख) भूख – भूखा
(ग) ईमान – ईमानदार
(घ) प्यास – प्यासा
(ङ) ईमान – ईमानदार
(च) परिवार – पारिवारिक
(छ) संसार – सांसारिक
(ज) घर – घरेलू

5.
(क) चमक + ईला = चमकीला
(ख) स्थान + ईय = स्थानीय
(ग) भय + आनक = भयानक
(घ) प्यास + आ = प्यासा
(ङ) जापान + ई = जापानी
(च) रक्त + इम = रक्तिम
(छ) योग + ई = योगी
(च) इज्जत + दार = इज्जतदार

6.

	वाक्य	विशेषण	अवस्था
(क)	सबसे अधिक मंदिर दक्षिण भारत में हैं।	सबसे अधिक	उत्तमावस्था
(ख)	गंगा एक पवित्र नदी है।	पवित्र	मूलावस्था
(ग)	गीता प्रतियोगिता परीक्षा में सफल रही।	सफल	मूलावस्था
(घ)	मदुरई का प्रवेश द्वार सुंदर है।	सुंदर	मूलावस्था
(ङ)	भारत की संस्कृति अत्यंत प्राचीन है।	प्राचीन	मूलावस्था

पाठ – 13 अविकार शब्द (अव्यय)

आओ कुछ बताएँ

(क) ऐसे शब्द जिनके रूप में लिंग, वचन, कारक, काल तथा पुरुष आदि के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता, जो सदा अपने मूल रूप में बने रहते हैं, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं।

(ख) अविकारी शब्द चार प्रकार के होते हैं–
1. क्रिया विशेषण
2. संबंधबोधक
3. समुच्चयबोधक
4. विस्मयादिबोधक

(ग) क्रियाविशेषण चार प्रकार के होते हैं–
1. कालवाचक क्रियाविशेषण
2. स्थानवाचक क्रियाविशेषण
3. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
4. रीतिवाचक क्रियाविशेषण

आओ कुछ करें

1. (क) (ii) और
(ख) (i) धीरे, वरना
(ग) (i) अलावा, भी
(घ) (ii) सदैव
(ङ) (iv) धीरे, भी

2. (क) रसोईघर के अंदर से गिलास ले लो।
(ख) तुम्हारे लिए यह काम आसान है।
(ग) नदी के ऊपर पुल बना है।
(घ) गंगा नदी हरिद्वार में बहती है।
(ङ) वह मेरे पास खड़ा है।

3. (क) क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द क्रियाविशेषण कहलाते हैं।
(ख) जो अव्यय संज्ञा या सर्वनाम के बाद आकर उनका संबंध वाक्य में प्रयुक्त अन्य शब्दों के साथ प्रकट करते हैं, उन्हें संबंध बोधक अव्यय कहते हैं।
(ग) दो शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों को परस्पर मिलाने वाले शब्द समुच्चयबोधक कहलाते हैं। इन्हें योजक भी कहते हैं।

4. (क) जो अव्यय संज्ञा या सर्वनाम के बाद आकर उनका संबंध वाक्य में प्रयुक्त अन्य शब्दों के साथ प्रकट करते हैं, उन्हें संबंध बोधक अव्यय कहते हैं।
उदाहरण– मेरे घर के आगे एक पेड़ है। उसके साथ मत खेलो।
(ख) (i) संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं, जबकि क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द क्रियाविशेषण कहलाते हैं।
(ii) क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द क्रिया विशेषण कहलाते हैं, जबकि जो अव्यय संज्ञा या सर्वनाम के बाद आकर उनका संबंध वाक्य में प्रयुक्त अन्य शब्दों के साथ प्रकट करते हैं, उन्हें संबंधबोधक अव्यय कहते हैं।

14. पदबंध तथा वाक्य

आओ कुछ करें

(क) कई पदों के योग से बने हुए वाक्यांश को जो एक ही पद का काम करता है, पदबंध कहते हैं।

(ख) वाक्य के छ: तत्व होते हैं–
1. सार्थकता, 2. योग्यता, 3. आकांक्षा, 4. आसक्ति या निकटता, 5. पदक्रम, 6. अन्वय।

(ग) काल के तीन प्रकार होते हैं–
1. वर्तमान काल, 2. भूतकाल, 3. भविष्यत्काल

(घ) सार्थक शब्दों का ऐसा समूह, जो व्यवस्थित हो और कोई अर्थ देता हो वाक्य कहलाता है।

आओ कुछ करें

1. (क) (iv) तीन (ख) (iii) तीन
(ग) (iv) वह पढ़ता है।
(घ) (iii) तीन (ङ) (ii) भाव की
(च) (iv) कर्म की

2. (क) कर्तृवाच्य में कर्ता की प्रधानता होती है।
(ख) कर्तृवाच्य के वाक्यों को कर्मवाच्य और भाववाच्य में बदला जा सकता है।
(ग) भाव वाच्य में कर्ता या कर्म की प्रधानता न होकर भाव की होती है।
(घ) केतन चित्र बनाता है। वाक्य में कर्तृवाच्य है।
(ङ) पुस्तक पढ़ी जाती है। वाक्य में कर्म वाच्य है।

3. (क) क्रिया के जिस रूप से उसके घटित होने के समय का बोध हो, उसे काल कहते हैं।
(ख) सार्थक शब्दों का ऐसा समूह, जो व्यवस्थित हो और कोई अर्थ देता हो, वाक्य कहलाता है।
(ग) वाच्य क्रिया का वह रूप है जिसके द्वारा स्पष्ट होता है कि वाक्य में कर्ता की प्रधानता है, कर्म की प्रधानता है या भाव की प्रधानता है।
(घ) जिस वाक्य में दो स्वतंत्र उपवाक्य किसी समानाधिकरण समुच्चयबोधक द्वारा परस्पर जुड़े हुए हों, वह संयुक्त वाक्य होते हैं। जैसे– वह बाजार गया और उसने फल खरीदे।

4. (क) रचना के आधार पर वाक्य भेद निम्नलिखित हैं–
1. सरल वाक्य – मोहन बाजार जा रहा है।
2. संयुक्त वाक्य – यहाँ पहले खेत था, परंतु अब घनी बस्ती है।
3. मिश्र वाक्य – प्रधानाचार्य ने कहा कि कल छुट्टी रहेगी।
(ख) 1. प्रधान उपवाक्य – किसी वाक्य का जो उपवाक्य स्वतंत्र होता है, दूसरे उपवाक्य पर निर्भर नहीं होता, बल्कि दूसरे उपवाक्य उस पर आ. श्रित होते हैं, उसे प्रधान उपवाक्य कहते हैं।
2. आश्रित उपवाक्य – जो उपवाक्य दूसरे उपवक्यों पर आश्रित होते हैं, वे आश्रित उपवाक्य कहलाते हैं।
(ग) काल के निम्नलिखित तीन प्रकार हैं– 1. भूतकाल – हमारा देश सोने की चिड़िया कहलाता था।
2. वर्तमान काल – मोहन पत्र लिख रहा है।
3. भविष्यत् काल – माँ, मेरे लिए खीर बनाएँगी।
(घ) क्रिया का वह रूप जो कर्ता, कर्म, भाव के अनुसार परिवर्तित होता है, वाच्य कहलाता है।
1. कर्तृवाच्य – चालक बस चला रहा है।
2. कर्मवाच्य – चालक द्वारा बस चलाई जाती है।
3. भाववाच्य – चालक से बस चलायी नहीं जाती।

15. मुहावरे और लोकोक्तियाँ

आओ कुछ बताएँ

(क) ऐसा वाक्यांश जो सामान्य से भिन्न किसी विलक्षण अर्थ को तुरंत प्रस्तुत करे और शाब्दिक अर्थ से भिन्न किसी अन्य अर्थ में रूढ़ हो जाए उसे 'मुहावरा' कहते हैं।

(ख) लोकोक्ति (लोक + उक्ति) का सामान्य अर्थ है– लोक में प्रचलित उक्ति।

लोकोक्ति वाक्य का अंग नहीं होती, उसका प्रयोग स्वतंत्र रूप से वाक्य के अंत में उदाहरणस्वरूप किया जाता है। उदाहरण– राम उड़ती चिड़िया के पंख गिन लेता है।

आओ कुछ करें

1. (क) (iii) प्रत्येक बात पर हँसते रहना।
   (ख) (ii) सुंदरता बढ़ जाना।
   (ग) (iii) आँखें चार होना।
2. (क) यह नेता जो भी करे कम है। सब एक ही थाली के चट्टे बट्टे हैं।
   (ख) गरीब भ्रम न पालें, अमीर सदा उन्हें उँगली पर नचाते रहते हैं।
   (ग) मजदूरों की दिहाड़ी काटकर मिल मालिक उनका गला काटते हैं।
   (घ) उधार माँगने पर बड़े भाई ने हरी को टका-सा जवाब दे दिया।
   (ङ) जन्मदिन का बड़ा सा केक देखते ही सभी बच्चों के मुँह में पानी आ जाता है।
3. (क) उसे आता-जाता कुछ है नहीं, बस डींगें हाँकता रहता है।
   (ख) तुम्हारे नौकर को कुछ भी कहो, उस पर असर नहीं होता। वह तो चिकना घड़ा है।
   (ग) वह अखबार भी नहीं पढ़ सकता। उसके लिए तो काला अक्षर भैंस बराबर है।
4. (क) मुहावरे और लोकोक्तियों में अंतर–
   1. मुहावरा वाक्य-खंड होता है, जबकि लोकोक्ति पूर्ण वाक्य होती है।
   2. मुहावरे वाक्य के बीच में प्रयोग किए जाते हैं, अतः वाक्य का अंग बन जाते हैं। लोकोक्ति वाक्य का अंग नहीं होती, उसका प्रयोग स्वतंत्र रूप से वाक्य के अंत में उदाहरणस्वरूप किया जाता है।
   3. पूर्ण इकाई होने के कारण लोकोक्ति के स्वरूप में परिवर्तन नहीं किया जा सकता, जबकि मुहावरे के शब्द वाक्य के अनुसार परिवर्तनीय होते हैं।
   (ख) मुहावरों के प्रयोग से भाषा को प्रभावशाली, मनमोहक तथा प्रवाहमयी बनाने में सहायता मिलती है। मुहावरे हिंदी भाषा में विचारों की अभिव्यक्ति का अभिन्न तथा महत्त्वपूर्ण अंग हैं। लोकोक्ति जन-समाज के द्वारा प्रयोग में लाये जाने वाला परम्परागत कथन होता है। ये ऐसी तीखी उक्तियाँ होती हैं, जो श्रोता के हृदय पर सीधा एवं गहरा प्रभाव डालती हैं।

16. विराम चिह्न

आओ कुछ बताएँ

(क) भाषा में स्पष्टता लाने के लिए, भाव समझने में सुविधा के लिए अर्थ का अनर्थ होने से रोकने के लिए विराम चिह्नों का प्रयोग किया जाता है।

(ख) इकहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग किसी कवि का उपनाम, पुस्तक का नाम, पत्र-पत्रिका का नाम, लेख या कविता का शीर्षक आदि का उल्लेख करते समय किया जाता है, जबकि किसी कथन को उद्धृत करते समय दोहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

(ग) विस्मयादिबोधक चिह्न का प्रयोग वाक्य में हर्ष, शोक, घृणा, भय विस्मय आदि भावों को दर्शाने के लिए किया जाता है।

(घ) उसका घर कितनी दूर स्थित है?

(ङ) छूटे हुए शब्द या अंश के लिए हंसपद चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

आओ कुछ करें

1. (क) (iv) संबोधन सूचक
   (ख) (i) कविता के पश्चात्
   (ग) (iii) हो के पश्चात्
   (घ) (iv) चार

2. (क) उद्धरण चिह्न दो प्रकार के होते हैं।
(ख) सामान्यत: वाक्य या कथन की समाप्ति पर पूर्ण विराम चिह्न प्रयोग करते हैं।
(ग) कथन को स्पष्ट करने या विवरण देने के लिए विवरण चिह्न का प्रयोग करते हैं।
(घ) लिखने से कुछ छूट जाए तो वहाँ हंसपद चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

3.

	(क)	(ख)	
(क)	,	(iii)	अल्पविराम
(ख)	।	(iv)	पूर्ण विराम
(ग)	?	(v)	प्रश्नवाचक चिह्न
(घ)	“ ”	(ii)	उद्धरण चिह्न
(ङ)	^	(i)	त्रुटिपूरक चिह्न

4. (क) राजकुमार, मोहन और सोहन जा रहे थे।
(ख) उनके भाई ने कहा, “तुम्हें मेरी इच्छा का पता कैसे होगा?”
(ग) अरे! तुम तो भूल ही गए, आज मेरा जन्मदिन है।
(घ) मोहन स्वरूप बोला, “अब मैं घर लौट रहा हूँ।”

5. (क) लिखते समय विराम अवस्था को प्रकट करने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें विराम चिह्न कहते हैं।
(ख) भाषा में विराम-चिह्नों की उपयोगिता–
1. भाषा में स्पष्टता लाने के लिए
2. भाव समझने में सुविधा के लिए
3. अर्थ का अनर्थ होने से रोकने के लिए।
(ग) लाघव चिह्न और संक्षेपक चिह्नों का प्रयोग किसी बड़े शब्द को संक्षिप्त रूप में लिखने के लिए किया जाता है।
(घ) उद्धरण चिह्न दो प्रकार के होते हैं–
1. इकहरा उद्धरण – रामधारी सिंह ‘दिनकर’, ‘भगवद्गीता’।
2. दोहरा उद्धरण – महावीर ने कहा, “अहिंसा परम धर्म है।”

17. अपठित गद्यांश

गद्यांश 1
(क) (स) श्रम
(ख) (स) धर्म
(ग) (ब) अध्ययन
(घ) (द) मनचाहा फल
(ङ) (द) श्रम का महत्त्व

गद्यांश 2
(क) (स) बराबर
(ख) (अ) सबको उन्नति और विकास के समान अवसर
(ग) (अ) शिक्षित-अशिक्षित में अन्तर न रखा जाए।
(घ) (ब) अवनति
(ङ) (द) ये सभी

गद्यांश 3
(क) (ब) ऊर्जा
(ख) (ब) डीजल
(ग) (अ) पवन से
(घ) (स) ऊर्जा के स्रोत
(ङ) (द) ऊर्जा के स्रोत एवं कार्य

गद्यांश 4
(क) (द) अभागे
(ख) (स) स्वदेश प्रेम से शून्य आदमी
(ग) (ब) कलंकित
(घ) (स) अपने देश की संस्कृति से
(ङ) (ब) प्रथम कर्तव्य

गद्यांश 5
(क) (स) भगतसिंह
(ख) (स) इंकलाब जिन्दाबाद
(ग) (अ) केन्द्रीय सभा में बम फेंकना
(घ) (स) भगतसिंह
(ङ) (ब) अंग्रेज

अभ्यास
1. (क) (अ) महाराणा प्रताप का
(ख) (ब) मेवाड़ की रक्षा के लिए
(ग) (अ) अकबर

(घ) (स) सुख और वैभव को छोड़कर
(ङ) (ब) अकबर
2. (क) (अ) बिल
(ख) (अ) निश्चित
(ग) (अ) योग
(घ) (स) मात्रा एवं मूल्य
(ङ) (स) दोषयुक्त और खराब

18. अपठित पद्यांश

पद्यांश 1
(क) (अ) पतली
(ख) (इ) कमर
(ग) (द) हृदय का
(घ) (ब) अलसी
(ङ) (द) सुमन
पद्यांश 2
(क) (ब) लाल
(ख) (स) मीठे
(ग) (अ) धनियाँ
(घ) (ब) मिस्सी
(ङ) (अ) अँवली
पद्यांश 3
(क) (अ) राजा
(ख) (स) तीन
(ग) (द) सात
(घ) (अ) ताकत आई
(ङ) (अ) राजा का बेटा
अभ्यास
1. (क) (अ) हिमालय
(ख) (स) पतंग
(ग) (ब) स्कूल के बाहर
(घ) (द) कवि ने
(ङ) (अ) हिम + आलय
2. (क) (अ) शक्ति
(ख) (द) विद्या
(ग) (अ) धैर्य
(घ) (द) कमजोर
(ङ) (अ) भगवान से प्रार्थना

19. पत्र-लेखन

1. (क) दो हृदयों को जोड़ने वाले माध्यम पत्र हैं।
(ख) पत्र प्रमुख रूप से चार प्रकार के होते हैं–
1. प्रार्थना-पत्र, 2. निजी-पत्र, 3. व्यावसायिक पत्र, 4. सरकारी पत्र।
(ग) पत्र के निम्नलिखित अंग होते हैं–
1. स्थान व तिथि
2. संबोधन
3. अभिवादन
4. विषय-वस्तु
5. समाप्ति
6. हस्ताक्षर पूर्व शब्दावली
7. हस्ताक्षर
8. पता

2. (क) वे पत्र जिनमें अवकाश की आवश्यकता, शिकायत तथा नौकरी के लिए आवेदन प्रमुख विषय होते हैं, प्रार्थना-पत्र कहलाते हैं।
(ख) सरकारी पत्र के अंतर्गत एक व्यक्ति से सरकार को, एक विभाग से दूसरे विभाग को तथा शासन द्वारा व्यक्ति को लिखे गए पत्र आते हैं।
(ग) पत्र लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए–
1. सरलता 2. स्पष्टता
3. संक्षिप्तता 4. मौलिकता।

3. (क) परीक्षा भवन,
नई दिल्ली।
दिनांक : 22 मार्च, 20__
आदरणीय दीदी,
सप्रेम नमस्ते।

हम सब यहाँ सकुशल हैं और आशा करते हैं कि आप भी वहाँ आनंद से होंगी। बहुत दिनों से आपका कोई पत्र प्राप्त नहीं हुआ, इसलिए मन थोड़ा चिंतित था।

घर पर पिताजी और माताजी का स्वास्थ्य अब पहले से काफी बेहतर है। छोटा भाई राहुल और वार्षिक परीक्षाओं की तैयारियों में व्यस्त है। दादाजी और दादीजी भी बिल्कुल ठीक हैं और अक्सर आपकी बातें करते हैं। घर का वातावरण बहुत ही सुखद है और हम सभी आपको बहुत याद करते हैं।

जैसे ही आपको समय मिले, अपनी कुशलता का समाचार देते हुए पत्र अवश्य लिखिएगा। छुट्टियों में घर आने का कार्यक्रम जरूर बनाइएगा।

आपकी छोटी बहन

रिया

(ख) सेक्टर-15,
चंडीगढ़।

दिनांक : 22 अप्रैल 20__

आदरणीय बड़े भाई साहब,

सादर चरण स्पर्श।

कल ही मुझे आपका प्रेरणादायक पत्र प्राप्त हुआ। आपने पत्र में मुझे समय के सदुपयोग और अनुशासन के महत्त्व के बारे में जो बातें समझाईं, वे वास्तव में मेरे लिए आँखें खोलने वाली थीं।

भाई साहब, मैं आपको यह विश्वास दिलाता हूँ कि मैंने आपकी दी हुई हर सीख को अपने जीवन में उतारने का निर्णय लिया है। अब मैं अपना समय व्यर्थ नहीं गँवाता और अपनी पढ़ाई के प्रति पूरी तरह गंभीर हूँ। मैं आपको यह आश्वासन देता हूँ कि भविष्य में भी मैं आपके बताए हुए मार्ग और आदर्शों पर ही आचरण करूँगा ताकि आप मुझ पर गर्व कर सकें। माताजी और पिताजी को मेरा सादर प्रणाम कहियेगा।

आपका अनुज

मयंक

20. निबंध लेखन

1. विज्ञान के और जीवन

प्रस्तावना – वर्तमान में बढ़ते विकास के साथ विभिन्न क्षेत्रों में विज्ञान का महत्त्व भी बढ़ता जा रहा है। विभिन्न क्षेत्रों में विज्ञान ने उन्नति की है। विज्ञान की भावी पीढ़ी के लिए आवश्यकता बढ़ रही है। वर्तमान में विज्ञान के विकास से मानव को कई क्षेत्रों में लाभ मिलता है। विज्ञान के विकास व बढ़ते उपयोग ने मनुष्य की कई गतिविधियों को आसान बनाया है।

विभिन्न क्षेत्रों में विज्ञान –

1. चिकित्सा के क्षेत्र में – चिकित्सा के क्षेत्र में विज्ञान ने एक अभूतपूर्व क्रान्ति ला दी है। कई चिकित्सा उपकरणों के विकास व दवाइयों की खोज से कैंसर, ट्यूमर जैसी खतरनाक बीमारियों का भी वर्तमान में इलाज संभव हो गया है।

2. मनोरंजन के क्षेत्र में– विज्ञान ने मनोरंजन के क्षेत्र में भी विकास किया है। टीबी, मोबाइल रेडियो ऐसे कई उपकरण हैं, जो मनोरंजन के साधन हैं। इनकी सहायता से व्यक्ति तनाव में प्रसन्नता का अनुभव करता है।

3. शिक्षा के क्षेत्र में – शिक्षा के क्षेत्र में भी विज्ञान एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। वर्तमान में विद्यार्थी कई साधनों जैसे– कम्प्यूटर, लैपटॉप की सहायता से पढ़ाई कर सकते हैं। मोबाइल की सहायता से ऑनलाइन स्टडी कर सकते हैं।

4. कम्प्यूटर के क्षेत्र में – वर्तमान में कम्प्यूटर मानव जीवन की एक आवश्यकता बन गया है। दैनिक गतिविधियों में कम्प्यूटर का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। कम्प्यूटर विज्ञान का एक महत्त्वपूर्ण आविष्कार है, इसकी सहायता से मनुष्य जटिल से जटिल गणनाएँ कुछ ही पल में बिना त्रुटि के

कर सकता है तथा अन्य क्षेत्रों में भी कम्प्यूटर अत्यन्त लाभदायक है।

5. उद्योग के क्षेत्र में – वर्तमान में विज्ञान के बढ़ते विकास से उद्योगों के क्षेत्र में भी वृद्धि हुई है। विज्ञान के कई आविष्कारों की मदद से उद्योग के क्षेत्र में विकास हुआ है।

विज्ञान के लाभ – विभिन्न क्षेत्रों में विज्ञान के कई लाभ होते हैं। अब यह हमारे ऊपर है कि हम विज्ञान द्वारा प्रदत्त सुविधाओं का किस प्रकार उपयोग करते हैं। यदि हम विज्ञान का सदुपयोग करेंगे तो निश्चित ही हर क्षेत्र में विकास करेंगे। वर्तमान समय में विज्ञान के आविष्कारों की वजह से हर क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास हो रहा है।

विज्ञान से हानियाँ – हर चीज के दो पहलू होते हैं। उसी प्रकार से विज्ञान के लाभ के साथ हानियाँ भी हैं। विज्ञान की मदद से परमाणु बम, हाइड्रोजन बम, विस्फोटक यंत्र बनाए गए हैं। जब भी इनका प्रयोग होगा मानव जाति को बहुत क्षति होगी। यह सभी के लिए हानिकारक होगा। अतः हमारा कर्तव्य है कि हमें विज्ञान का उपयोग मानव जीवन के कल्याण के लिए ही करना चाहिए।

उपसंहार – अतः हमें अपने जीवन में विज्ञान का सदुपयोग मानव जाति के कल्याण के लिए ही करना चाहिए, यही हम सबके लिए अच्छा रहेगा। विज्ञान के आविष्कारों से समय की बचत भी होती है। अतः इस समय का उपयोग भी हमें देश के विकास के लिए ही करना चाहिए।

2. कम्प्यूटर की उपयोगिता

प्रस्तावना– कम्प्यूटर विज्ञान का अनोखा उपहार है। यह मानव जीवन हेतु बहुपयोगी है। कम्प्यूटर चलाना बेहद ही सरल है। अपनी सुगमता और कार्यक्षमता के कारण इसका प्रयोग व्यापक तौर पर होता है। जैसे– ऑफिस, बैंक, होटल, शिक्षण संस्थान, स्कूल, कॉलेज, दुकान इत्यादि।

कम्प्यूटर का आविष्कार – जीवन में इतने उपयोगी कम्प्यूटर का आविष्कार चार्ल्स बैबेज ने किया था। बैबेज ने उन्नीसवीं शताब्दी की शुरुआत में एक इलेक्ट्रॉनिक कम्प्यूटर का आविष्कार किया था जो दुनिया का पहला कम्प्यूटर माना जाता है।

कम्प्यूटर के प्रकार – तकनीकी के आधार पर कम्प्यूटर चार प्रकार के होते हैं– माइक्रो कम्प्यूटर, मिनी कम्प्यूटर, मेनफ्रेम कम्प्यूटर और सुपर कम्प्यूटर।

कम्प्यूटर किस प्रकार कार्य करता है– कम्प्यूटर एक मशीन है जो हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर से मिलकर बना होता है। एक कम्प्यूटर इनपुट यूनिट के माध्यम से डेटा प्राप्त करता है। जो उसे दिए गए निर्देशों के आधार पर होता है और डेटा को प्रोसेस करने के बाद इसे आउ. टपुट डिवाइस के माध्यम से वापस भेजता है।

कम्प्यूटर के लाभ – आज कम्प्यूटर ने हमारे कार्यों को काफी आसान बना दिया है। वास्तव में कम्प्यूटर आधुनिक तकनीक का एक बहुत बड़ा आविष्कार है। जिसके बहुत से लाभ हैं–

शिक्षा : ऑनलाइन क्लासेस, ई–लर्निंग, रिचर्स और प्रोजेक्ट वर्क के लिए।

व्यवसाय : डेटा मैनेजमेंट, अकाउन्टिंग, प्रेजेन्टेशन और ऑनलाइन मार्केटिंग में।

बैंकिंग और फाइनेंस : ऑनलाइन लेनदेन, एटीएम, बैलेंस चैक और स्टेटमेंट रिकॉर्ड रखने के लिए।

स्वास्थ्य : मरीजों का रिकॉर्ड रखने, बीमारियों का निदान करने और रिपोर्ट तैयार करने में।

संचार : ईमेल, वीडियो कॉन्फ्रेसिंग और सोशल मीडिया के माध्यम से दुनिया भर में जुड़ने के लिए।

मनोरंजन : मूवी देखने, गाने सुनने, गेम खेलने और फोटो एडिटिंग के लिए।

यात्रा और परिवहन : रेलवे, हवाई जहाज और होटल की टिकट बुक करने के लिए।

विज्ञान और अनुसंधान : मौसम का पूर्वानुमान, अंतरिक्ष यान की निगरानी और जटिल गणनाओं के लिए।

कम्प्यूटर के अत्यधिक उपयोग के कुछ नुकसान – लगातार स्क्रीन देखने से आँखों की समस्या, शारीरिक श्रम में कमी और मानसिक थकान जैसी बीमारियाँ हो सकती हैं।

3. मेरा प्रिय खेल हॉकी

मेरा प्रिय खेल हॉकी है, जो न केवल भारत का राष्ट्रीय खेल है, बल्कि पूरी दुनिया में लोकप्रिय है। हॉकी भारत का राष्ट्रीय खेल है। यह एक लोकप्रिय और आकर्षक खेल भी है जिसे कई लोग खेलना पसंद करते हैं। इस खेल के कई नियम हैं जिनका पालन निपष्क्ष खेल के लिए प्रत्येक टीम को करना चाहिए। हॉकी का खेल तेज, ताकत और कौशल का अद्भुत संगम है। इसे 11-11 खिलाड़ियों की दो टीमों के बीच खेला जाता है, और इसका मुख्य उद्देश्य बॉल को विरोधी टीम के गोलपोस्ट में डालकर अंक प्राप्त करना होता है। हॉकी खेलने के लिए खिलाड़ियों को शारीरिक फिटनेस के साथ-साथ मानसिक चपलता भी चाहिए होती है।

हॉकी का मैदान हरा-भरा और बड़ा होता है, जिसमें खिलाड़ियों को तेज दौड़ना और बॉल को अपने नियंत्रण में रखना होता है। इस खेल में अनुशासन और टीम वर्क की बहुत जरूरत होती है, क्योंकि एक खिलाड़ी के प्रदर्शन से पूरी टीम की जीत या हार तय हो सकती है। भारत का हॉकी में गौरवमयी इतिहास है। ध्यानचंद जैसे महान खिलाड़ी ने इस खेल को नई ऊँचाइयाँ दीं और भारत को कई ओल. पिक स्वर्ण पदक दिलाए। हॉकी खेलते समय अनुशासन, धैर्य और टीम वर्क का महत्त्व समझ में आता है तथा एकजुटता, संगठन, अनुशासन एवं सहनशीलता आदि गुण स्वाभाविक रूप से विकसित होते हैं, जो न केवल खेल में बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में आवश्यक हैं।

इस खेल से शारीरिक फिटनेस भी अच्छी रहती है और मानसिक संतुलन भी बना रहता है। यही कारण है कि हॉकी मेरा प्रिय खेल है और इसे खेलकर आत्मविश्वास और जोश महसूस होता है।

4. सिकुड़ते वन

बढ़ती जनसंख्या, शहरीकरण और औद्योगीकरण के कारण वनों का तेजी से विनाश हो रहा है, जिसके कारण वे सिकुड़ रहे हैं। यह स्थिति पर्यावरण असंतुलन, ग्लोबल वार्मिंग, मृदा अपरदन और वन्य जीवों के आवास विनाश का कारण बन रही है। वनों का संरक्षण पर्यावरण के संतुलन और जीवन की निरंतरता के लिए अनिवार्य है।

सिकुड़ते वनों के मुख्य कारण और प्रभाव–

जनसंख्या वृद्धि और शहरीकरण– रहने और उद्योग स्थापित करने के लिए वनों की कटाई की जा रही है।

कृषि का विस्तार– खेती के लिए नई जमीन तैयार करने हेतु जंगलों को साफ किया जा रहा है।

प्राकृतिक आपदाएँ– वनों के कटाव से मिट्टी का कटाव और बाढ़ की समस्याएँ बढ़ रही हैं।

वन्यजीवों पर संकट– प्राकृतिक आवास नष्ट होने से जंगली जीवों की संख्या में भारी कमी आ रही है।

संरक्षण के उपाय –

वन संपदा का अवैध कटाव रोकना – वनों को सिकुड़ने से रोकने के लिए वन संपदा अवैध कटाव को रोकना होगा।

वृक्षारोपण को बढ़ावा देना – हमें अधिक से अधिक से वन लगाने होंगे, जिससे वन संपदा में बढ़ोत्तरी हो सके।

स्थायी वन प्रबंधन अपनाना – वन प्रकृति का अनमोल उपहार हैं और वन हैं तो जीवन है। अतः पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए वनों का संरक्षण नितांत आवश्यक है।

5. आदर्श पुस्तकालय

पुस्तकालय वह स्थान है, जहाँ लोग ज्ञान प्राप्त करने और अध्ययन के लिए एकत्रित होते हैं। यहाँ पुस्तकों को व्यवस्थित रूप से बुकशेल्फ में रखा जाता है और कई पुस्तकालयों में डिजिटल सॉफ्टवेयर का उपयोग किया जाता है ताकि पुस्तकों के लेन-देन का रिकॉर्ड रखा जा सके। तकनीकी विकास के कारण, अब पुस्तकें ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर भी उपलब्ध हैं, लेकिन फिर भी पुस्तकालय का महत्त्व अपरिवर्तित है।

हर स्कूल अपने छात्रों को पुस्तकालय में जाने और किताबें पढ़ने के लिए निर्धारित समय देता है, ताकि वे बचपन से ही पढ़ाई की आदत डाल सकें। छात्र पुस्तकालय का उपयोग अपने

असाइनमेंट और छुट्टियों के होमवर्क को पूरा करने के लिए भी करते हैं।

पुस्तकालय के कुछ नियम होते हैं, जैसे कि यहाँ शांति बनाए रखना और पुस्तकें ठीक से संभालना। पुस्तकालय ज्ञान और मनोरंजन का एक अद्भुत स्रोत है, जहाँ हर कोई अपनी जानकारी और कौशल में वृद्धि कर सकता है। यहाँ किताबों, पत्रिकाओं और डिजिटल संसाधनों का एक विशाल संग्रह होता है।

पुस्तकालय विद्यार्थियों को एकाग्रता और अध्ययन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण भी विकसित करता है, जो उनके जीवन में सफलता की ओर मार्गदर्शन करता है।

21. संवाद लेखन

1. माँ – रोहन तुम अभी तक खेल ही रहे हो? होमवर्क कब करोगे?

पुत्र – बस पाँच मिनट और माँ फिर कर लूँगा।

माँ – बेटा, तुम हर काम को कल पर टाल देते हो। क्या तुम्हें पता है कि बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता?

पुत्र – माँ, अभी तो बहुत समय है, मैं रात में कर लूँगा।

माँ – यही तुम्हारी गलती है। जो व्यक्ति समय की कद्र नहीं करता। महान लोग समय के एक-एक पल का सही उपयोग करते हैं।

पुत्र – मुझे समझ आ गया, माँ। मैं अभी जाकर अपना काम करता हूँ।

माँ – बहुत अच्छा।

पुत्र – धन्यवाद माँ, मुझे समय का महत्त्व समझाने के लिए, आगे मैं अपने सभी काम समय पर पूरे करूँगा।

2. राहुल – समीर आपने देखा है कि हमारे स्कूल की सफाई व्यवस्था बहुत खराब है।

समीर – हाँ राहुल, मैंने भी देखा। लोग चिप्स के पैकेट और खाली बोतलें वहीं फेंक देते हैं। यह देखकर बहुत दुख होता है।

राहुल – बिल्कुल! स्वच्छता केवल हमारे घर तक सीमित नहीं होनी चाहिए। अगर हम अपने आस-पास सफाई नहीं रखेंगे, तो बीमारियाँ फैलने का डर बना रहेगा।

समीर – सही कर रहे हो। हमें अपनी कक्षा और स्कूल के साथ-साथ अपने मोहल्ले को भी साफ रखना चाहिए। आखिर यह हमारी भी तो जिम्मेदारी है।

राहुल – क्यों न हम अपनी कक्षा के सभी छात्रों के साथ मिलकर एक 'सफाई अभियान' शुरू करें? हम हर शनिवार को स्कूल परिसर की सफाई कर सकते हैं।

समीर – यह बहुत अच्छा विचार है! हम कूड़ेदान का सही उपयोग करने के लिए चार्ट और पोस्टर भी बना सकते हैं ताकि दूसरे छात्र भी जागरूक हों।

राहुल – हाँ, और हमें दूसरों को भी यह समझाना होगा कि कूड़ा हमेशा डस्टबिन में ही डालें। 'स्वच्छ भारत' तभी बनेगा जब हम सब मिलकर छोटे-छोटे कदम उठायेंगे।

समीर – ठीक है, तो कल सुबह हम अपनी प्रार्थना सभा में इसके बारे में प्रधानाचार्य जी से बात करेंगे।

राहुल – शानदार! मिलकर काम करेंगे तो हमारा वातावरण जरूर स्वच्छ और सुदंर बनेगा।

3. शिक्षिका – सुप्रभात बच्चो! आज हम एक बहुत ही गंभीर विषय 'नशा और उसके दुष्प्रभावों' पर चर्चा करेंगे। क्या आप जानते हैं कि तंबाकू और धूम्रपान हमारे स्वास्थ्य के लिए कितने खतरनाक हैं।

रोहन – जी मैम, हमने सुना है कि इससे कैंसर होता है। पर क्या यह वाकई इतना जल्दी असर करता है?

शिक्षिका – बिल्कुल रोहन। तंबाकू में निकोटिन जैसा जहरीला पदार्थ होता है, जो धीरे-धीरे हमारे शरीर के अंगों को खोखला कर देता है। धूम्रपान सीधे हमारे फेंफड़ों पर हमला करता है, जिससे सांस लेने में तकलीफ और दमा जैसी बीमारियाँ हो सकती हैं।

सपना – मैम, मैंने देखा है कि कुछ लोग सोचते हैं कि सिगरेट पीने से तनाव कम होता है। क्या यह सच है?

शिक्षिका – नहीं सपना, यह केवल एक भ्रम है। नशा तनाव कम नहीं करता, बल्कि इंसान को उसका गुलाम बना देता है। इससे हृदय रोग और मुँह के कैंसर का खतरा भी कई गुना बढ़ जाता है।

आर्यन – मैम, जो लोग खुद धूम्रपान नहीं करते पर उनके पास खड़े रहते हैं, क्या उन्हें भी नुकसान होता है?

शिक्षिका – हाँ आर्यन! धूम्रपान करने वालों के पास रहने वालों को भी उतना ही नुकसान होता है, जितना पीने वालों को। इसलिए हमें ऐसी जगहों से दूर रहना चाहिए।

सभी छात्र – मैम, आज हमने जाना कि तंबाकू और धूम्रपान जानलेवा है। हम शपथ लेते हैं कि न तो हम खुद कभी इनका सेवन करेंगे और न ही अपने आसपास किसी को करने देंगे।

शिक्षिका – शाबास बच्चो! एक स्वस्थ शरीर ही एक स्वस्थ समाज का आधार है।

4. राहुल – नमस्ते अमित! कैसे हो? क्या तुमने कल होने वाले भारत और ऑस्ट्रेलिया के मैच की तैयारी कर ली है?

अमित – नमस्ते राहुल! मैं ठीक हूँ। हाँ, बिल्कुल ! मैंने तो कल के लिए अपना सारा काम आज ही खत्म कर लिया है ताकि बिना किसी रुकावट के मैच देख सकूँ।

राहुल – अमित! मुझे तो लगता है कि कल का मैच बहुत रोमांचक होने वाला है। तुम्हें क्या लगता है, कौन जीतेगा?

अमित – वैसे तो दोनों टीमें बहुत मजबूत हैं, लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि भारतीय टीम ही जीतेगी। पिछले कुछ मैचों में हमारे बल्लेबाजों ने कमाल का प्रदर्शन किया है।

राहुल – हाँ, तुम्हारी बात सही है। खासकर विराट और रोहित की जोड़ी अगर जम गई, तो ऑस्ट्रेलिया के गेंदबाजों की खैर नहीं।

अमित – बिल्कुल! लेकिन हमें उनके तेज गेंदबाजों से भी सावधान रहना होगा। पिच की स्थिति को देखते हुए टॉस जीतना भी बहुत महत्त्वपूर्ण होगा।

राहुल – सही कहा। चलो फिर, कल दोपहर को मेरे घर आ जाना। हम साथ मिलकर बड़े पर्दे पर मैच देखेंगे और अपनी टीम का उत्साह बढ़ायेंगे।

अमित – जरूर राहुल! मैं समय पर पहुँच जाऊँगा। बहुत मजा आएगा।

22. कहानी लेखन

1. खरगोश और कछुआ

एक बार की बात है, एक जंगल में एक कछुआ रहता था। वह अपने से मतलब रखने वाला शांत स्वभाव का था। उसी जंगल में एक खरगोश भी रहता था, जो बहुत फुर्तीला और बातूनी था। वह कई दौड़ प्रतियोगिताएँ जीत चुका था और उसे इस बात का बहुत घमंड था। वह दूसरे जानवरों से हमेशा अपने रेस जीतने के किस्सों के बारे में बात करता रहता था।

एक दिन जंगल के तालाब के पास कई जानवर थे, खरगोश वहाँ आया और हमेशा की तरह अपनी फुर्तीली चाल के बारे में बखान करने लगा। तभी उसने कछुए को देखा और उसे शैतानी सूझी। वह कछुए के पास गया और कहने लगा–

खरगोश - "अरे कछुए, तुम तेज चलना क्यों नहीं सीखते? यदि तुम ऐसा करो, तो हम एक दिन रेस लगा सकते हैं।"

कछुआ केवल उसे देखकर मुस्कुराया और आगे बढ़ गया। खरगोश कछुए को तंग करना चाहता था। अतः वह प्रतिदिन उसकी धीमी चाल को लेकर उस पर टिप्पणी करने लगा। एक दिन, जब खरगोश ने उसे फिर से चुनौती दी तो कछुए ने उत्तर दिया–

कछुआ - "ठीक है, मैं चुनौती स्वीकार करता हूँ।"

उसके ऐसा कहते ही पास खड़े बाकी जानवरों को बहुत आश्चर्य हुआ लेकिन कछुए की हिम्मत देखकर वे सब ताली बजाने लगे और उसका उत्साहवर्धन करने लगे।

कुछ दिनों के बाद दौड़ का दिन आया। इस बड़ी चुनौती का परिणाम देखने के लिए जंगल के सारे जानवर इकट्ठा हुए थे। जब दौड़ शुरू हुई तो कुछ ही देर में खरगोश कछुए से बहुत आगे निकल गया। कुछ दूर दौड़ने के बाद खरगोश ने जब पीछे मुड़कर देखा तो उसे कछुआ दूर-दूर कहीं दिखाई नहीं दिया। इसलिए उसने सोचा कि जब तक कछुआ यहाँ पहुँचेगा वह थोड़ी देर आराम कर ले। ऐसा सोचते ही खरगोश एक बड़े से बरगद के पेड़ के नीचे लेट गया। पत्तों की छाया और ठंडी हवा से उसे तुरंत नींद आ गई।

दूसरी ओर कछुआ बिना हार माने अपनी धीमी गति से लगातार चल रहा था। कुछ समय बाद वह उसी स्थान तक पहुँच गया जहाँ खरगोश सो रहा था। कछुआ उसके पास से गुजरते हुए उसी तरह से चलता रहा। कुछ ही समय में लगातार चलते-चलते वह अपने लक्ष्य तक पहुँच गया और दौड़ जीत गया।

वहीं कुछ समय बाद जब खरगोश की आँख खुली तो वह वापस तेजी से लक्ष्य की ओर दौड़ा, लेकिन वहाँ पहुँचने पर कछुए को वहाँ पहले से खड़ा देखकर खरगोश के होश उड़ गए। वह बहुत लज्जित हुआ। उसे अपने किए पर पछतावा होने लगा क्योंकि अपने घमंड के कारण सबसे धीरे चलने वाले जानवर से हार गया।

2. शेर और खरगोश

एक समय की बात है, एक घने जंगल में भासुरक नामक एक बहुत ही क्रूर शेर रहता था। वह अपनी भूख मिटाने के लिए रोज जंगल के कई जानवरों को मार डालता था। इससे जंगल के जानवरों को अपनी जान का खतरा रहने लगा।

एक दिन, सभी जानवरों ने मिलकर सभा की और डरते-डरते शेर के पास गए। उन्होंने शेर से प्रार्थना की, "महाराज, आप जंगल के राजा हैं। आप रोज इतने जानवरों को मारते हैं, ऐसे तो एक दिन जंगल खाली हो जाएगा। इससे अच्छा है कि हम रोज स्वयं ही एक पशु आपके पास भेज दिया करेंगे, जिससे आपकी भूख भी शांत हो जाएगी और हम भी निश्चिंत रहेंगे।"

शेर मान गया और इस तरह रोज एक जानवर शेर के पास जाने लगा। एक दिन एक छोटे से खरगोश की बारी आई। वह खरगोश बहुत चतुर था। उसने जानबूझकर शेर के पास जाने में बहुत देर कर दी। उधर भूख से आगबबूला शेर इंतजार कर रहा था। जब खरगोश धीरे-धीरे चलते हुए उसके पास पहुँचा, तो शेर गुस्से में दहाड़ा। खरगोश ने चतुरता से कहा, "महाराज! इसमें मेरी कोई गलती नहीं है। मैं तो समय पर ही निकल आया था, लेकिन रास्ते में मुझे एक दूसरा शेर मिल गया। वह बहुत बड़ा और शक्तिशाली था। वह कह रहा था कि वही इस जंगल का असली राजा है।"

यह सुनकर भासुरक गुस्से में पागल हो गया और बोला, "इस जंगल में मेरे अलावा कोई राजा नहीं हो सकता। मुझे अभी उस दूसरे शेर के पास ले चल।"

खरगोश शेर को एक पुराने, गहरे कुएँ के पास ले गया और बोला, "महाराज, वह दुष्ट शेर इसी कुएँ में छिपा है।" शेर कुएँ में झाँका, तो उसे अपनी ही परछाई दिखाई दी। अपनी परछाई को ही दूसरा शेर समझकर, वह जोर से दहाड़ा और दूसरे शेर को मारने के लिए कुएँ में कूद पड़ा। कुआँ बहुत गहरा था, जिसके कारण वह उसमें से बाहर नहीं आ सका और उसकी मौत हो गई।

खरगोश की चतुराई से जंगल के सभी जानवर हमेशा के लिए निडर हो गये।

3. हाथी और घोड़ा

एक राज्य में एक घोड़ा और एक हाथी थे। दोनों ही राज्य के महाराज की सेवा में थे। घोड़े का अस्तबल और हाथी का विश्राम स्थल आमने-सामने थे। जब सभी सैनिक तथा राजा के अन्य राज-सेवक रात को सोने चले जाते

थे, तब घोड़ा और हाथी जी–भरकर एक–दूसरे से बातें करते और एक–दूसरे का हाल–चाल लेते थे। घोड़ा महाराज को बहुत प्रिय था। महाराज हर रोज घोड़े पर शिकार करने जाते थे। शिकार पर जाने से पहले घोड़े को अच्छी तरह से खिलाया–पिलाया जाता था ताकि उसे पूरे दिन के लिए शक्ति मिल सके। उसको मनपसंद चने और हरी–भरी घास उसे हर रोज खाने को मिलती थी। रात को घोड़ा जब शिकार से लौटता तो वह हाथी को बढ़ा–चढ़ाकर पूरे दिन के बारे में बताता था। वह कहता, "आज तो महाराज बहुत खुश हुए। मेरी तेज रफ्तार के कारण ही वे एक सुंदर से हिरण का शिकार कर पाए।" कभी कहता, "आज तो महाराज को मैंने बहुत तेज भगाया, उन्होंने मुझे 'शाबाश' कहा और मेरी बहुत प्रशंसा की।" इस प्रकार वह प्रतिदिन अपने किस्से हाथी को सुनाता रहता था। अब तो हाथी को इसकी आदत हो गई। हाथी मन ही मन उदास होता कि राजा उसकी परवाह नहीं करते किंतु वह इस विषय में घोड़े से कुछ नहीं कहता था।

घोड़े को अब बहुत घमंड हो गया था। एक दिन उसने हाथी का मजाक उड़ाते हुए कहा, "तुम्हारा यहाँ काम ही क्या है, पूरे दिन पड़े आराम ही करते रहते हो। महाराज केवल मेरी ही परवाह करते हैं।" इतना ही नहीं, घोड़े को अपनी तेज रफ्तार पर भी घमंड होने लगा। वह हाथी को उसके वजन और अपनी तेज रफ्तार को लेकर बातें सुनाने लगा। परंतु हाथी ने अपना धैर्य नहीं खोया। उसे अपने आप पर विश्वास था। वह सही समय का इंतजार कर रहा था और फिर दशहरे का पवित्र दिन आया। घोड़ा सुबह से ही शिकार पर जाने को उत्सुक था और वह हाथी के सामने अपनी तारीफों के पुल बाँध रहा था, परंतु कोई भी नौकर उसकी तरफ न आकर सभी के सभी हाथी को नहला–धुलाकर साफ करने के लिए निकल गए। हाथी को नहलाकर उस पर रेशमी वस्त्र डाले गए। उसे बहुत ही आकर्षक तरीके से तैयार किया गया। उस पर महाराज के आसन के लिए मखमली पोशाक की राजगद्दी लगाई गई और बहुत ही सुंदर–सी छतरी भी लगाई गई। कुछ सेवकों ने आकर हाथी पर रंग–बिरंगे चित्र भी बनाए। उसे छन–छन बजने वाले घुँघरू भी पहनाए गए।

हाथी के साथ ऐसा सुंदर व्यवहार होता देखकर घोड़े को मन–ही–मन बहुत ईर्ष्या हुई। अपनी ईर्ष्या छिपाते हुए उसने हाथी से पूछा, "हाथी भाई यह सब क्या हो रहा है?"

हाथी ने बड़े प्यार से जवाब दिया, "हर साल, दशहरे के त्योहार वाले दिन महाराज पूरे राज्य की सैर पर जाते हैं। इतना ही नहीं, उन्हें अपनी पीठ पर बैठाकर मैं जहाँ भी जाता हूँ, वहाँ लोग मेरी पूजा करते हैं, मुझे तरह–तरह के व्यंजन खिलाते हैं और बहुत प्यार भी करते हैं।"

घोड़े ने उदास स्वर में पूछा, "तो क्या आज महाराज शिकार पर नहीं जाएँगे?"

हाथी ने कहा, "नहीं भाई, आज का दिन वो सिर्फ मुझ पर सवार होंगे, मुझे बहुत प्यार करेंगे।"

इतने में हाथी की सवारी निकली। घोड़ा दूर से सब देख रहा था, किस प्रकार महाराज ने हाथी को पुचकार कर प्यार किया, इतना ही नहीं उन्होंने सवारी करने से पहले हाथी को प्रणाम भी किया, फिर वे उस पर लगी गद्दी पर बैठकर राज्य की सैर करने निकल गए। उस दिन घोड़े को किसी ने नहीं पूछा। शाम को जब सुंदर, सुशोभित हाथी सेवकों के साथ अपने विश्राम स्थल पर वापस आया तो उसके साथ–साथ भेंट में चढ़ी खाने की सामग्री भी लाई गई। घोड़ा सबकुछ देख रहा था। वह बहुत उदास लग रहा था।

घोड़े को उदास देखकर हाथी बोला, "अरे भाई, उदास क्यों होते हो? तुम्हें तो हररोज इतना महत्त्व दिया जाता है, फिर एक दिन अगर मुझे मिल गया तो इसमें क्या मुसीबत आ गई? घोड़ा धीमी आवाज में बोला, "पर मुझे इस तरह पूरे राज्य के सामने महत्त्व नहीं मिलता, यहाँ तक कि महाराज ने तुम्हें प्रणाम भी किया. .... मेरे साथ तो ऐसा कभी नहीं हुआ।"

यह सुनकर हाथी ने घोड़े को समझाया, "देखो भाई, सबकी अपनी विशिष्टता होती है। जो काम

तुम कर सकते हो, वो मैं नहीं कर सकता, वैसे ही जो कार्य मेरे हैं उन्हें तुम कभी नहीं कर पाओगे। हर एक व्यक्ति, हर एक प्राण ी इस सृष्टि के लिए किसी न किसी तरह महत्त्वपूर्ण है। बस यही बात अब तुम भी समझ लो और अब कल से जब महाराज तुम पर बैठकर शिकार करने जाएँ, तब वापस आकर मेरा मजाक मत उड़ाना, मेरे भाई!"

घोड़े को अपने व्यवहार पर बहुत शर्म आई, उसने हाथी से माफी माँगी और दोनों में फिर से पक्की दोस्ती हो गई।

4. चिड़िया और हाथी

एक जंगल में बहुत सारी चिड़िया पेड़ पर अपना घोंसला बनाकर रहती थीं। उसी में से एक पेड़ पर गोरैया चिड़िया का भी घोंसला था। जिसमें वह अपने पति के साथ रहती थी। उसी जंगल में एक बड़ा और ताकतवर हाथी रहता था। उसका नाम था गजराज। गजराज बहुत घमंडी था। वह छोटे और कमजोर जानवरों को वेवजह परेशान करता था।

एक दिन गजराज जंगल में घूमते हुए उसी पेड़ के पास पहुँच गया जिस पर उस चिड़िया का घोंसला था। उस घोंसले में चिड़िया ने दो अंडे दिए हुए थे। गजराज ने अपनी मस्ती और घमंड में आकर उस पेड़ की शाखाओं को तोड़ना शुरू कर दिया। उसने उस शाखा को भी तोड़ डाला, जिस पर चिड़िया का घोंसला रखा हुआ था। शाखा के टूटते ही चिड़िया के घोंसलें से अंडे नीचे गिर गए और टूट गए। यह देखकर चिड़िया को हाथी पर बहुत गुस्सा आया। मगर वह उसका क्या कर सकती थी? वह अपने बच्चों के लिए टूटी हुई डाली पर बैठकर रोने लगी। जब चिड़ा खाना लेकर वापस आया तो चिड़िया ने उसे सब बताया। दोनों ने घमंडी हाथी को सबक सिखाने का निर्णय लिया।

वे दोनों पंछी अपने एक दोस्त कठफोड़वा के पास गए और उसे अपनी सारी दास्तान बताई। कठफोड़वा और उस चिड़िया ने मिलकर हाथी को सबक सिखाने की योजना बनायी। कठफोडवा ने अपने दोस्त मेंढ़क और मधुमक्खियों को भी अपने साथ ले लिया। अपनी योजना के तहत सबसे पहले मधुमक्खी ने हाथी के कान में गुनगुनाना शुरू किया। हाथी मस्त हो गया, तभी कठफोड़वा अपने साथी के साथ आया और हाथी की दोनों आँखें फोड़ दीं। हाथी जोर-जोर से चिल्लाने लगा। पास के ही एक दलदल में मेंढ़क ने टर-टर करना चालू कर दिया। हाथी को लगा पास में ही पानी की झील है और वह मेंढ़क की आवाज सुनकर वहाँ पर गया और दलदल में फँस गया। इस प्रकार से चिड़िया ने अपने दोस्तों के साथ मिलकर हाथी से अपना बदला लिया।

5. द्रोणाचार्य और अर्जुन

आचार्य द्रोणाचार्य हस्तिनापुर के राजकुमारों को विधिवत् धनुर्विद्या की शिक्षा देते थे। अर्जुन पर उनकी विशेष कृपा थी। आचार्य प्रातः अपने शिष्यों को लेकर वन में चले जाते और वहाँ पेड़ पर बैठी चिड़िया, हवा में उड़ते बाज, दौड़ते मृगों पर बाणों का प्रयोग कराते। जंगल में एक बार द्रोणाचार्य स्नान करने के लिए नदी में उतरे, तभी एक मगर ने आचार्य की टाँग पकड़ ली। द्रोणाचार्य कराह उठे। उनकी शिष्य मंडली ने देखा तो सभी चिंतित हो उठे। उन्हें नहीं सूझ रहा था कि आचार्य को कैसे बचाएँ, तभी अर्जुन ने अपने बाणों से मगर का खुला मुख बींध डाला। उसका जबड़ा खुला का खुला रह गया। आचार्य की टाँग उसकी पकड़ से छूट गई।

द्रोणाचार्य ने जल से बाहर आकर अर्जुन को आशीर्वाद दिया– "वत्स! यह मगर मायावी था। मैंने तुम्हारी परीक्षा ली थी और तुम इसमें सफल हुए।" मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ, तुम विश्व में सबसे बड़े धनुर्धारी बनोगे।

दुर्योधन द्रोणाचार्य के आशीर्वाद को सुनकर चिढ़ गया, परंतु वह कुछ बोला नहीं। इसी प्रकार गुरु द्रोणाचार्य का अर्जुन पर ममत्व बढ़ता चला गया। एक बार आचार्य द्रोण ने अपने सभी शिष्यों को बुलाया और एक पेड़ पर रखी एक नकली चिड़िया को दिखाया। "बताओ तुम्हें पेड़ पर क्या दिख रहा है?" आचार्य ने पूछा?

लगभग सभी राजकुमारों ने कहा कि उन्हें चिड़िया के साथ-साथ पेड़, आकाश और वृक्ष

की पत्तियाँ तक दिखाई दे रही हैं। सबसे अंत में उन्होंने अर्जुन से पूछा कि उसे क्या दिखाई दे रहा है। इस पर अर्जुन ने कहा– "गुरुदेव! मुझे तो केवल चिड़िया की आँख दिखाई दे रही है।"

"तो फिर चलाओ बाण", द्रोणाचार्य ने कहा। अर्जुन ने तीर चलाया तो वह सीधा चिड़िया की आँख में जा लगा। सभी ने अर्जुन की प्रशंसा की। आचार्य द्रोण ने आशीर्वाद देते हुए कहा, "अर्जुन! तुम मेरी सभी परीक्षाओं में उत्तीर्ण हुए हो। मैं गर्व के साथ कह सकता हूँ कि युद्ध में कोई भी धनुर्धारी तुम्हें नहीं हरा पायेगा।"

6. चरवाहा और गाय

एक गाँव में बूढ़ी माँ और उसका चरवाहा बेटा रहा करते थे। बुढ़िया के हालात खराब थे। अत्यंत गरीबी के कारण दो वक्त की रोटी मुश्किल से मिलती थी। माँ–बेटे जैसे–तैसे जीवन काट रहे थे। अब उसका बेटा बड़ा हो गया था। बूढ़ी माँ को लगा कि बेटा अब कुछ कमायेगा तो स्थिति सुधर जाएगी। घर में दो पैसे आयेंगे। यही सोचकर बूढ़ी माँ ने गाँव में कुछ लोगों से बेटे को काम देने की प्रार्थना की। गाँव के लोगों ने उस लड़के को अपनी गायों की रखवाली करने के लिए रख लिया। अब लड़का रोज गाय चराने जाने लगा। वह जिस जगह अपनी गाय चराने जाता था, वहीं नदी के दूसरी ओर धर्मराज (यमराज) भी अपनी गाय चरने छोड़ देते थे। उनकी एक गााय रोज नदी पार करके लड़के की गायों में शामिल हो जाती थी। दिनभर रहने के बाद वह शाम को फिर नदी पार करके लौट जाती थी। यह सिलसिला हर दिन चलता रहा। जब महीना पूरा हुआ तो बूढ़ी माँ ने बेटे से कहा– महीना पूरा हो गया है, जा मेहनताना ले आ। तब बेटे ने अपनी माँ को उस गाय के बारे में बताया कि किस प्रकार एक गाय रोज आकर उसकी गायों में शामिल हो जाती है। वह दिनभर उसकी गायों के साथ चरती है और शाम को अपने आप वापस चली जाती है। यह सुनकर माँ ने कहा, 'अब जब वह गाय शाम को वापस जाए तो तुम भी उसके पीछे चले जाना और देखना गाय कहाँ जाती है।

अगले दिन चरवाहे ने वैसा ही किया जैसा उसकी माँ ने कहा था। उसने देखा कि गाय वैतरणी पार करके दूसरी ओर जा रही है तो उसने गाय को आवाज दी और कहा कि रुको गाय माता मैं भी आपके साथ चलूँगा। इतना कहकर चरवाहे ने गाय की पूँछ पकड़ ली और गाय के साथ धर्मराज के दरवाजे पर पहुँच गया। दरवाजे पर खड़े पहरेदार ने यह सूचना धर्मराज को दी।

धर्मराज ने उस चरवाहे को अंदर बुलवाया और पूछा कि वह सशरीर यहाँ कैसे आ गया। तब चरवाहे ने गाय की पूँछ पकड़कर आने वाली बात बताई और कहा कि मेरी गायों के साथ आपकी गाय भी चरने आती है। मैं उसकी भी रखवाली करता हूँ। आज महीना पूरा होने पर मैं अपना मेहनताना लेने आया हूँ। यह सुनकर ध र्मराज ने प्रसन्न होकर उसे चरवाहे को मेहनताने के तौर पर खूब सारे हीरे–मोती दिए, लेकिन लड़का भोला–भाला था। उसे हीरे–मोतियों का कोई ज्ञान नहीं था। उसने उसकी पोटली बाँधी और चल दिया। रास्ते में उसने पोटली को झटक दिया, जिससे सारे हीरे–मोती वहीं गिर गए, बस कुछ ही कपड़े में चिपके रह गए।

चरवाहा जब घर पहुँचा, उसकी माँ ने उससे पूछा कि वह अपना मेहनताना ले आया। तब उसने अपनी माँ को कपड़े में चिपके हुए कुछ बचे हुए हीरे–मोती दिखाए। उन्हें देखते ही चरवाहे की माँ ने उससे कहा, "इस धन के आते ही हमारे घर में कितना प्रकाश हो गया है। चल दुकान जाकर सामान ले आते हैं। उन्होंने दुकान जाकर दुकानदार को वह हीरे–मोती दिखाए। उन्हें देखकर दुकानदार खुश हो गया। उसने चरवाहे और उसकी माँ से कहा कि दिनभर में जितना सामान उठाकर ले सकते हो ले जाओ।

इस प्रकार वह चरवाहा धर्मराज की गाय चराकर धनवान हो गया।

7. बंदर और गौरैया

एक जंगल में एक पेड़ पर गौरैया का एक सुंदर और आरामदायक घोंसला था। एक बार सर्दियों के मौसम में बहुत तेज बारिश हो रही

थी। उसी पेड़ के नीचे ठंड से काँपते हुए एक बंदर ने शरण ली।
गौरैया को उस पर दया आ गई। उसने बंदर से कहा, "तुम लोग तो इंसान की तरह हाथ-पैर वाले हो, फिर घर क्यों नहीं बना लेते? घर होने से सर्दी, गर्मी और बरसात से रक्षा होती है।
बंदर को एक छोटी-सी चिड़िया की सलाह पसंद नहीं आई। वह बंदर गुस्से में चिल्लाया, "तू चुप रह, तू अपनी सलाह अपने पास रख।" गौरैया फिर भी उन्हें समझाती रही। उससे गुस्सा होकर वह बंदर पेड़ पर चढ़ा और उसने गौरैया का घोंसला तोड़कर नीचे फेंक दिया।

8. साँप और किसान

एक गाँव में एक किसान रहता था। उसकी सारी जमीन पिछले 2-3 सालों से सूखे की मार झेल रही थी और वो पूरी तरह से सूख चुकी थी। सर्दी का मौसम आ चुका था। किसान पेड़ के नीचे आराम कर रहा था। शाम हो चुकी थी। तभी उसकी नजर पास बने बिल पर गई। वहाँ एक साँप अपना फन उठाए बैठा था।
किसान के मन में एक बात आई कि यह साँप तो सालों से यहीं रहता होगा, लेकिन मैंने इसकी कभी पूजा नहीं की और शायद यही वजह है कि मेरी सारी जमीन सूख चुकी है। किसान ने ठान लिया कि मैं हर रोज साँप की पूजा किया करूँगा।
किसान एक कटोरे में दूध ले आया और बिल के पास रखकर कहने लगा, "हे नागराज, मुझे नहीं पता था कि आप यहाँ रहते हैं। इसलिए मैंने कभी आपकी पूजा नहीं की। मुझे क्षमा करें। अबसे मैं हर रोज आपकी पूजा करूँगा। किसान सोने चला गया। सुबह देखा तो उस दूध के कटोरे में कुछ चमक रहा था। पास जाकर किसान ने देखा तो वह सोने का सिक्का था। अब तो यह रोज का सिलसिला हो गया। किसान रोज साँप को दूध पिलाता और उसे सुबह एक सोने का सिक्का मिलता। एक दिन किसान को किसी काम से दूसरे गाँव जाना पड़ा तो उसने अपने बेटे को रोज साँप को दूध पिलाने को कहा, "किसान के बेटे ने वैसा ही किया।"
अगली सुबह उसे भी सोने का सिक्का मिला। उसके बेटे ने सोचा कि यह साँप बड़ा कंजूस है। जरूर उसके बिल में बहुत से सोने के सिक्के होंगे, लेकिन यह तो बस रोज एक ही सिक्का देता है। अगर मैं इसको मार दूँ तो मुझे सारा का सारा सोना मिल जाएगा।
अगली शाम जब लड़का दूध देने गया। तो उसने साँप को देखते ही छड़ी से उस पर वार किया, जिससे साँप ने विकराल रूप ध ारण कर लिया। जख्मी साँप ने उसको काट लिया। उसके बाद अपने बिल में चला गया। किसान के रिश्तेदारों ने उसके बेटे का अंतिम संस्कार कर दिया।
जब किसान लौटा, तो अपने की मृत्यु की खबर से बहुत व्यथित हुआ। उसे साँप पर बहुत क्रोध आया, लेकिन साँप ने उसे सारी सच्चाई बताई। किसान ने कहा, "मुझे पता है कि गलती मेरे बेटे की थी, उसकी तरफ से मैं माफी माँगता हूँ।" किसान ने उसे दूध दिया और उससे फिर माफी माँगी।

9. चूहा और शेर

एक जंगल में एक शेर था। एक दिन वह दोपहर को एक पेड़ के नीचे आराम कर रहा था। अचानक से एक चूहा उसके ऊपर आकर नाचने लगा। जिससे शेर की नींद खुल गई। उसने चूहे को हाथ में पकड़कर कहा, "तेरी यह हिम्मत, मैं अभी तुझे खा जाता हूँ।" चूहा डरकर बोला, "शेर जी माफ करना, गलती हो गई, अगर आप मुझे जाने दें, मैं एक न एक दिन आपके काम जरूर आऊँगा।" यह सुनकर शेर हँस पड़ा और बोला, "तुम इतने छोटे हो, तुम क्या मेरे काम आओगे। यह कहकर उसने चूहे को छोड़ दिया।"
कुछ दिनों बाद, एक दिन चूहे ने दूर से शेर की जोर-जोर से दुःख भरी दहाड़ सुनी। वह भागकर शेर के पास पहुँचा। उसने देखा कि शेर एक शिकारी के जाल में फँसा हुआ है। यह देखकर चूहे ने झटपट अपने तीखे दाँतों से पूरे जाल के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। इस तरह शेर शिकारी के जाल से आजाद हो गया। शेर ने चूहे को धन्यवाद किया और फिर वह दोनों शिकारी के आने से पहले वहाँ से चले गए।

10. बातूनी कछुआ और हंस

एक समय की बात है, एक खूबसूरत घाटी में एक तालाब के पास एक कछुआ और दो हंस रहते थे। वे तीनों घनिष्ठ मित्र थे। कछुआ बेहद बातूनी स्वभाव का था। वह जरूरत से ज्यादा बोलता था। हंस अपने मित्र की यह आदत जानते थे।

एक साल बारिश न होने के कारण उस तालाब का पानी सूखने लगा। इस बजह से तालाब के पास रहने वाले छोटे जानवर, मछलियाँ और पौधे मरने लगे। इसलिए दूसरे बड़े जानवर तालाब को छोड़कर दूसरी जगह रहने जाने के बारे में सोचने लगे। दोनों हंस भी वहाँ से उड़ कर जाने का विचार करने लगे और नए घर की तलाश में रोजाना इधर–उधर भटकने लगे। जल्द ही उन्हें सुदूर जंगल में एक तालाब मिला जो पानी से भरा हुआ था। तालाब का परिवेश उनके रहने के लिए बिल्कुल उपयुक्त था।

वे लौटकर पुरान तालाब पर आये और अपने दोस्त कछुए को नए सुंदर तालाब के बारे में बताया। कछुआ दोनों हंस को नया घर मिलने से बहुत खुश हुआ। लेकिन उसे अहसास हुआ कि दूर होने के कारण वह नए तालाब तक नहीं जा सकता। उसने उनसे कहा– "मैं तुम्हारी तरह उड़ नहीं सकता। यह मेरे लिए बहूत दूर है। मुझे नहीं पता कि मैं यहाँ क्या करूँगा और मैं सूखे से भी नहीं बच पाऊँगा। "

हंस उसकी चिंता को पहले ही समझ गये थे। उनमें से एक ने कहा– "चिंता मत करो दोस्त। हमने तुम्हें नई जगह ले जाने का एक उपाय पहले ही सोच लिया है। लेकिन, इसके लिए तुम्हें वचन देना होगा कि पूरी यात्रा के दौरान गलती से भी अपना मुँह नहीं खोलोगे। यदि तुमने ऐसा किया तो तुम्हारे जीवन को खतरा होगा।

यह सुनकर कछुआ बहुत उत्साहित हुआ और उसने कहा– "मैं बिल्कुल चुप रहूँगा और तब तक एक शब्द भी नहीं बोलूँगा जब तक तुम दोनों मुझे बोलने के लिए नहीं कहोगे।"

इसके बाद हंस एक मजबूत छड़ी लेकर आए और कछुआ से उसे अपने मुँह से मजबूती से पकड़ने के लिए कहा। फिर उन्होंने छड़ी के दोनों सिरे अपनी चोंच में पकड़ लिए और उसे लेकर उड़ने लगे। उन्होंने कई मील सुरक्षित यात्रा की। कछुआ इस दौरान जंगल, पहाड़ियों और घास के मैदानों से गुजरते हुए एक पक्षी की तरह अनुभव कर रहा था। अंततः जब वे एक गाँव के ऊपर से होकर उड़ रहे थे। कछुए को उड़ता देखकर कुछ ग्रामीण बच्चे चिल्लाने लगे– "अरे वह देखो कितना कितनी हँसी की बात है। एक कछुआ छड़ी से चिपक गया है और दो हंस उसे ले जा रहे हैं।"

गाँव के बच्चों का इस तरह उसे चिढ़ाना कछुआ बर्दाश्त नहीं कर पाया। वह बहुत अपमानित महसूस करने लगा। अपने बातूनी स्वभाव के कारण और अपनी स्थिति उन्हें समझाने के लिए बोलकर बताने का निर्णय किया और मुँह खोल दिया। लेकिन इससे पहले कि वह कुछ कह पाता, वह धरती पर गिर गया और उसके टुकड़े–टुकड़े हो गए। अपने मित्र की ऐसी मृत्यु पर हंसों को बहुत दुःख हुआ। वे भरे हृदय से अपने नए घर की ओर उड़ गए।

आदर्श प्रश्न–पत्र–1

1. अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) व्याकरण को तीन भागों–1. वर्ण विचार, 2. शब्द विचार और 3. वाक्य–विचार में बाँटा जा सकता है।

(ख) समास के छः भेद होते हैं–1. अव्ययीभाव समास, 2. तत्पुरूष समास, 3. कर्मधारय समास, 4. द्विगु समास, 5. द्वंद्व समास और 6. बहुव्रीहि समास।

(ग) जब दो धवनियाँ परस्पर मिलती हैं और मिलकर एक स्वतंत्र भाषिक रूप बना लेती हैं, उसे संधि कहते हैं।

(घ) किसी प्राणी, वस्तु, गुण, भाव या स्थिति के नाम को संज्ञा कहते हैं।

2. लघु उत्तरीय प्रश्न
(क) जिस साधन के द्‌वारा मनुष्य अपने भावों या विचारों का बोलकर या लिखकर प्रकट करता है, उसे भाषा कहते हैं।
(ख) शब्द जब व्याकरण के नियमों में बँधाकर प्रयोग किया जाता है, तो उसे पद कहते हैं।
(ग) समान अर्थ बताने वाले शब्दों को पर्यायवाची या समानार्थी शब्द कहते हैं। उदाहरण—सूर्य, रवि, दिनकर, भानु।

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न
(क) रूढ़ और योगरूढ़ शब्दों में अन्तर—
● रूढ़ शब्द उन शब्दों को कहते हैं, जिनके टुकड़े कर पर कोई अर्थ नहीं निकलता (जैसे-घर, फल)
● योगरूढ़ शब्द—वे शब्द जो मेल से तो बनते हैं पर सिकी विशेष अर्थ के लिए प्रसिद्ध हो जाते हैं। जैसे पंकज: कीचड़ में जन्म लेने वाला अर्थात् कमल।
4. वचन बदलकर लिखिए—
वस्तुएँ, चिड़िया, कमीजें, रोटी, घोड़े, प्रजाजन।

आदर्श प्रश्न-पत्र–2

1. अतिलघु उत्तरीय प्रश्न
(क) कारक के आठ भेद होते हैं।
(ख) कर्म के आधार पर क्रिया के मुख्यत: दो प्रकार होते हैं–(1) अकर्मक और सकर्मक।
(ग) सुंदर, दयालु, काला, मीठा आदि।
(घ) वे शब्द जिनमें लिंग, वचन या काल के कारण कोई परिवर्तन होता है, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं।
2. लघु उत्तरीय प्रश्न
(क) संज्ञा के जिस रूप से किसी को पुकारने या संबोधित करने का बोध हो, उसे संबोधन कारक कहते हैं।
(ख) 1. सर्वनाम का प्रयोग संज्ञा के स्थान पर किया जाता है।
2. सर्वनाम शब्दों का रूप वचन और कारक के अनुसार बदलता है।
(ग) जो शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, उन्हें क्रिया विशेषण कहते हैं (जैसे–ध ीरे-धीरे, तेज)।
3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न
(क) करण और अपादान कारक में अंतर–दोनों का चिह्न 'से' है, लेकिन करण कारक में 'से' का प्रयोग क्रिया के साधन (जैसे-कलम से लिखना) के लिए होता है, जबकि अपादान कारक में 'से' का प्रयोग अलग होने (जैसे-पेड़ से पत्ता गिरना) के भाव में होता है।
(ख) रचना की दृष्टि से वाक्य के तीन भेद होते हैं। 1. सरल वाक्य (जैसे-राम पढ़ रहा है।) 2. संयुक्त वाक्य (जैसे-वह आया और चला गया।)
(ख) मिश्रित वाक्य (जैसे–जैसे ही वह आया, बारिश होने लगी।
4. प्रत्यय जोड़कर विशेषण–
(क) चमक + ईला – चमकीला
(ख) भय + आनक – भयानक
(ग) प्यास + आ – प्यासा
(घ) स्थान + ईय – स्थानीय
5. पत्र एवं निबन्धात्मक प्रश्न
(क) मित्र से बधाई-पत्र (सफलता पर बध ाई देने के लिए)
सिकन्दरा, आगरा
दिनांक : 12 मई 20__
प्रिय मित्र रवि
सप्रेम नमस्ते।
मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि तुमने अपनी कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। तुम्हारी इस शानदान सफलता पर मेरी और मेरे परिवार की ओर से तुम्हें बहुत-बहुत बधाई! तुम्हारी कड़ी मेहनत और लगन का ही यह परिणाम है।

आशा है कि तुम भविष्य में भी इसी प्रकार सफलता के कीर्तिमान स्थापित करते रहोगे। चाचाजी और चाचीजी को मेरा सादर प्रणाम कहना।

तुम्हारा मित्र
अजेयकान्त

(ख) तीन दिनों के अवकाश हेतु प्रार्थना–पत्र (प्रधानाचार्य को आवेदन)

सेवा में,
प्रधाानाचार्य महोदय
श्रीराम इण्टर कालेज
छटीकरा, मथुरा

विषय–तीन दिनों के अवकाश हेतु प्रार्थना–पत्र।

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मुझे कल रात से तेज बुखार है, जिसके कारण डॉक्टर ने मुझे तीन दिनों तक पूर्ण आराम करने की सलाह दी है। अत: मैं दिनांक 23 अप्रैल 20__ तक विद्यालय में उपस्थित होने में असमर्थ हूँ।

आपसे निनम्र प्रार्थना है कि मुझे तीन दिनों का अवकाश प्रदान करने की कृपा करें। इसके लिए मैं आपका अत्यंत आभारी रहूँगा।

दिनांक : 23/4/20__

आपका आज्ञाकारी छात्र
जगदीश वर्मा
कक्षा–5 'अ'

(ग) 1. विज्ञान के और जीवन

प्रस्तावना – वर्तमान में बढ़ते विकास के साथ विभिन्न क्षेत्रों में विज्ञान का महत्त्व भी बढ़ता जा रहा है। विभिन्न क्षेत्रों में विज्ञान ने उन्नति की है। विज्ञान की भावी पीढ़ी के लिए आवश्यकता बढ़ रही है। वर्तमान में विज्ञान के विकास से मानव को कई क्षेत्रों में लाभ मिलता है। विज्ञान के विकास व बढ़ते उपयोग ने मनुष्य की कई गतिविधियों को आसान बनाया है।

विभिन्न क्षेत्रों में विज्ञान –

1. चिकित्सा के क्षेत्र में – चिकित्सा के क्षेत्र में विज्ञान ने एक अभूतपूर्व क्रान्ति ला दी है। कई चिकित्सा उपकरणों के विकास व दवाइयों की खोज से कैंसर, ट्यूमर जैसी खतरनाक बीमारियों का भी वर्तमान में इलाज संभव हो गया है।

2. मनोरंजन के क्षेत्र में– विज्ञान ने मनोरंजन के क्षेत्र में भी विकास किया है। टीबी, मोबाइल रेडियो ऐसे कई उपकरण हैं, जो मनोरंजन के साधन हैं। इनकी सहायता से व्यक्ति तनाव में प्रसन्नता का अनुभव करता है।

3. शिक्षा के क्षेत्र में – शिक्षा के क्षेत्र में भी विज्ञान एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। वर्तमान में विद्यार्थी कई साधनों जैसे– कम्प्यूटर, लैपटॉप की सहायता से पढ़ाई कर सकते हैं। मोबाइल की सहायता से ऑनलाइन स्टडी कर सकते हैं।

4. कम्प्यूटर के क्षेत्र में – वर्तमान में कम्प्यूटर मानव जीवन की एक आवश्यकता बन गया है। दैनिक गतिविधियों में कम्प्यूटर का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। कम्प्यूटर विज्ञान का एक महत्त्वपूर्ण आविष्कार है, इसकी सहायता से मनुष्य जटिल से जटिल गणनाएँ कुछ ही पल में बिना त्रुटि के कर सकता है तथा अन्य क्षेत्रों में भी कम्प्यूटर अत्यन्त लाभदायक है।

5. उद्योग के क्षेत्र में – वर्तमान में विज्ञान के बढ़ते विकास से उद्योगों के क्षेत्र में भी वृद्धि हुई है। विज्ञान के कई आविष्कारों की मदद से उद्योग के क्षेत्र में विकास हुआ है।

विज्ञान के लाभ – विभिन्न क्षेत्रों में विज्ञान के कई लाभ होते हैं। अब यह हमारे ऊपर है कि हम विज्ञान द्वारा प्रदत्त सुविधाओं का किस प्रकार उपयोग करते हैं। यदि हम विज्ञान का सदुपयोग करेंगे तो निश्चित ही हर क्षेत्र में विकास करेंगे। वर्तमान समय में विज्ञान के आविष्कारों की वजह से हर क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास हो रहा है।

विज्ञान से हानियाँ – हर चीज के दो पहलू होते हैं। उसी प्रकार से विज्ञान के लाभ के साथ हानियाँ भी हैं। विज्ञान की मदद से परमाणु बम, हाइड्रोजन बम, विस्फोटक यंत्र बनाए गए हैं। जब भी इनका प्रयोग होगा मानव जाति को बहुत क्षति होगी। यह सभी के लिए हानिकारक होगा। अत: हमारा कर्तव्य है कि हमें विज्ञान का उपयोग मानव जीवन के कल्याण के लिए ही करना चाहिए।

उपसंहार – अत: हमें अपने जीवन में विज्ञान का सदुपयोग मानव जाति के कल्याण के लिए ही करना चाहिए, यही हम सबके लिए अच्छा रहेगा। विज्ञान के आविष्कारों से समय की बचत भी होती है। अत: इस समय का उपयोग भी हमें देश के विकास के लिए ही करना चाहिए।

❑❑